SHREE JAIN LIBRARY
No—
SIROHI STATE
Date.....19

Digamber Jain—Surat. Regd. No. B-744.

वीर सं० २४४९
भाद्रपद।
विक्रम १९७९.

संपादक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष १६ वां
अंक ११ वां
ई. सन् १९२३

## विषयानुक्रमणिका।


| नं० | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | सम्पादकीय वक्तव्य .... .... .... .... | १ |
| २. | जैन समाचार संग्रह .... .... .... .... | ५ |
| ३. | छोटालाल गांधीनो छुटकारो ने मानपत्र .... .... | ८ |
| ४. | दशलक्षण धर्म ( ब्र० ज्ञानानंद कृत कविता ) .... | ९ |
| ५. | दशलक्षण धर्म ( बा० सुमतिलाल जैन ).... .... | १७ |
| ६. | मिथ्यात्वका लक्षण भेद, व उनका स्वरूप.... .... | १९ |
| ७. | फालसा ( " वैद्य " ) .... .... .... .... | २१ |
| ८. | बारह भावना व बारह मासा .... .... .... | २२ |
| ९. | गुजरात व वागड़में सं० विद्यालयकी आवश्यकता व गुजरात वागड़के श्रीमानोंसे अपील .... .... | २५ |
| १०–११ | जीवदया; गरमीमें गरम चाय.... .... | २७–२८ |
| १२. | प्रातः कर्म विचार ( मोहनलाल मथुरदास काणीसा ) | २९ |


पेशगी वार्षिक मूल्य रु० १–१२–० पोस्टेज सहित।

# " दिगम्बर जैन " के तीन उपहारग्रन्थकी

# वी० पी० होरही हैं।

दिगम्बर जैन (वर्ष १४ व १५ वाँ) वीर सं० २४४७ व २४४८ अर्थात् सं० १९७७-७८ का वार्षिक मूल्य करीब २ सभी ग्राहकोंसे वसूल आनेका है और इन दो वर्षोंके तीन उपहार ग्रन्थ—

१. श्रावक प्रतिक्रमण ( विधि, अर्थ सहित )

२. बालबोध जैनधर्म ( चतुर्थ भाग )

३. जैन इतिहस प्रथम भाग ( प्रथम १२ तीर्थंकरोंका चरित्र )

तैयार हैं और दो वर्षोंका मूल्य वसूल करनेके लिये रु० ३।=)की वी० पी० से भेजे जारहे हैं। आशा है सभी ग्राहक वी० पी० आते ही मनीऑर्डर चार्ज =) सहित ३।।) देकर तुर्त छुड़ा लेवेंगे।

जब इन दो वर्षोंके सभी अंक आपको मिल चुके हैं तब आपका प्रथम कर्तव्य है कि वी० पी० अवश्य छुड़ा लेवें। इन पीछले दो वर्षोंका मूल्य देरसे वसूल करनेमें हमारा ही प्रमाद कारणरूप है।

वर्तमान १६ वें वर्षमें भी एक ग्रन्थ उपहारमें दिया जायगा जो तैयार होनेपर इस वर्षका मूल्य भी वसूल किया जायगा। जिन २ ग्राहकोंका मूल्य आगया है उनको ये ग्रन्थ बुकपेकेटसे भेजे जांयगे।

किसी ग्राहकको हिसाबमें कुछ भूल मालूम हो तौभी वे वी० पी० वापिस न करें। जो कुछ भूल होगी, दूसरे वर्षके मूल्यमें समज ली जायगी।

**मैनेजर, दिगम्बर जैन-सूरत।**

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

# दिगंबर जैन.

# THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १६ वाँ. | वीर संवत् २४४९. भाद्रपद वि० सं० १९७९. | अंक ११ वाँ.

## संपादकीयवक्तव्य.

**दशलाक्षणी पर्व ।**

हमारा वार्षिक पुण्य पर्वाधिराज श्रीदशलाक्षणी पर्व व्यतीत होरहा है व शीघ्र ही चतुर्दशी आते ही दशलाक्षणी पर्व पूर्ण होगा । दश धर्मके दश दिनोंमें अनंत चतुर्दशीका माहात्म्य विशेष है और इसीलिये सभी भाई बहिनें चतुर्दशीके दिन विशेष धर्मध्यान करते हैं । सब दिनके नहीं तो चतुर्दशीका अपवास तो बहुतसे भाई बहिनें अवश्य करते ही हैं । और इस दिन सब भाई अपना२ व्यवहार बंद ही रखते हैं । तथा कई स्थानों पर हमारे इस पर्वके कारण व्यापार बन्द रहता है । अब इस चतुर्दशीके दिन हमें अनेक प्रकारकेव्रत नियम लेने चाहिये, सुबहसे रात्रि तक सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, पूजन, उपदेश आदिमें ही समय विताना चाहिये । हम 'अहिंसा परमो धर्मः'के माननेवाले हैं इसलिये हमारा प्रथम कर्तव्य है कि हमें एक सी वस्तु कि जिसके बननेमें हिंसा होती हो, मंदिरमें नहीं वर्तनी चाहिये । अर्थात् विलायती व मीलके बने कपड़े, जिसके तैयार करनेमें हजारों मन चर्बी वापरी जाती है ऐसे कपड़े न वर्तकर हाथके सूतकी व हाथकी बुनी विशुद्ध खद्दरका ही उपयोग करना चाहिये तथा कीडोंको उबाल कर तैयार होनेवाले रेशमके अशुद्ध कपड़ेको तो मंदिरमें अब स्थान न देना चाहिये । शास्त्रोंके बंधन, चंदोवा, तोरण आदिमें मखमल व रेशमी वस्त्रोंका उपयोग बहुत होता है उसको बंद करके शुद्ध खद्दरके ही वेष्टन उपकरणादि बदल देने चाहिये ।

अब इस चतुर्दशीको कई स्थानों पर कलह चतुर्दशी बना देते हैं अर्थात् इसदिन न्याति व मंदिर संबंधी अनेक झघड़े उपस्थित होकर बहुत टंटा फिसाद होता है यह ठीक नहीं है । मंदिरके हिसाब आदि पर्वके पहिले ही समज लेने चाहिये जिससे पर्वमें झघडा होनेका मौका ही न आवे ।

* * *

**तीर्थरक्षा फंड ।**

हम गतांकमें लिख चुके हैं तौ भी फिर लिखते हैं कि हमें इसी पर्वमें तीर्थरक्षा फंडको नहीं भूलना चाहिये । हमारे तीर्थोंकी रक्षा ही हमारे धर्म आयातनोंकी

रक्षा है व विना द्रव्य रक्षा कैसे होसकती है इसलिये प्रति वर्ष दि० जैनीके प्रत्येक घर पीछे तीर्थरक्षाफंडका १) देना अतीव सुलभ है। यदि सभी भाई इसप्रकार चंदा दे देवें तो हजारों रु० की वार्षिक आमदनी तीर्थक्षेत्र कमेटीको हो जावे परंतु इसके लिये प्रयत्न करनेकी आवश्यक्ता है। प्रयत्न यही करना चाहिये कि मंदिरोंमें मंदिरोंके लागके रुपिये उगाहे जाते हैं उसी वक्त सबसे तीर्थरक्षा फंडका रुप्या भी ले लेना चाहिये अथवा किसी स्वयंसेवकोंको खड़े होकर घर२ फिरकर ये रुपये इकट्ठे करके तीर्थक्षेत्रकमेटीको भेज देने चाहिये।

* * *

**दानका शुभ अवसर**

हमारी दि० जैन समाजमें ऐसी कई संस्थाएं हैं जिनका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है परन्तु उसमें खर्चके लिये काफी स्थायी फंड नहीं है इससे उनका कार्य चालु सहायतासे पूर्ण हो सकता है, ऐसी संस्थाओंमें वार२ दान देना दि०जैन समाजका कर्तव्य है परन्तु इस दशलाक्षणी पर्वके उत्तम अवसरमें तो ऐसा दान विशेषरूपसे होना चाहिये। इन संस्थाओंमें दान करनेसे चार दानोंका पुण्य मिलता है। हमारे दश धर्मोंमें उत्तम त्याग धर्मका माहात्म्य अपार है परन्तु इसके पालनके लिये हमें कुछ न कुछ त्याग (दान) इस दशलाक्षणी पर्वमें अवश्य करना चाहिये। हम समझते हैं कि सभी स्थानोंपर चतुर्दशीके दिन एक **दानका चंदा** होना चाहिये उसमें जितने रुपये नकद इकत्र हो हमारी नीचे लिखी संस्थाओंको बांटकर तुर्त ही मनिओर्डरसे भेज देने चाहिये। दान करने योग्य संस्थाओंके नाम इस प्रकार है— कुन्थलगिरि ब्रह्मचर्य आश्रम, स्या० महाविद्यालय काशी, ऋषभ ब्रह्मचर्य आश्रम जयपुर, महाविद्यालय व्यावर, श्राविकाश्रम बम्बई, उदेपुर पार्श्वनाथ विद्यालय, ब्र० आश्रम कारंजा, अनाथाश्रम देहली, अनाथाश्रम बड़नगर, औषधालय बड़नगर, सतर्क० जैन पाठशाला सागर, जैन शिक्षा मंदिर जबलपुर, जैन सिद्धांत विद्यालय मोरेना, भदावरप्रांत विद्यालय भींड, उदासीनाश्रम कुंडलपुर आदि आदि।

* * *

**सेठजीके का सदुपयोग।**

स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्दजी करीब ढाई लाख रुपयेकी अपनी जुबिलीबागकी मिलकियत दान कर गये हैं जिसकी आयका उत्तम सदुपयोग इसके ट्रस्टियों द्वारा होरहा है। अभी इसके उत्साही मंत्री सेठ ठाकोरदास भगवानदास जौहरीने प्रकट किया है कि दानवीर सेठजीके जुबेलीबाग ट्रस्ट फंडकी आयसे सन् १९३३–३४के लिये इस प्रकार सहायता देना मंजूर होगया है। कोलेजके २९ विद्यार्थियोंको कुल २९१) मासिक सहायता, रतलाम बोर्डिंग १२९) मासिक, फुलकौर कन्याशाला सूरत २०) मासिक, बम्बई बोर्डिंग ३१) मासिक, कुरावद पाठशाला ९) मासिक, बनारस विद्यालय १६) मासिक, भींडर पाठशाला १०) मासिक, केशरियाजी

पाठशाला ७) मासिक, उदैपुर पाठशाला १५) मासिक तथा इसप्रकार आपकी हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी ओरसे १४ विद्यार्थियोंको १४१॥) मासिक स्कोलर्शीप, हीराबाग धर्मशालाके फंडसे १९ विद्यार्थियोंको रु० ३०६) मासिककी सहायता दी जायगी। इस प्रकार दानवीर सेठजीकी ओरसे करीब ७००, ८०० रु० मासिककी सहायता विद्यार्थियोंको दी जाती है। दानका सच्चा उपयोग यही है। क्या अन्य करोडाधीश, व लक्षाधीश सेठ माणिकचंदजीके दानका अनुकरण करेंगे ?

* * *

**लालाजीके इतिहासमें भूल।**

प्रसिद्ध देशभक्त लाला लाजपतरायजीने स्कूलोंमे चलानेके लिये "भारतका इतिहास" हिन्दी भाषामें बनाकर प्रकट किया है उसमें जैन धर्मपर अनेक प्रकारके आक्षेप लालाजीकी जैन धर्मके इतिहासकी अनानकारीसे होगये हैं जिसका विरोध स्थान२ पर होरहा है। इस इतिहासमें लालाजीने लिखा है कि (१) जैनधर्मके नये संप्रदायकी बुनियाद २४वें तीर्थंकरने डाली (२) बौद्धधर्म व जैनधर्मका सामान्य प्रभाव राजनीतिक अधःपातका कारण हुआ है। (३)जैनधर्मकी शिक्षा बौद्धधर्मसे अधिकांश मिलती है (४) बौद्धधर्म आरम्भके आसपास ही जैन धर्मका प्रकाश हुआ। (५) जैन स्पष्टरूपसे ईश्वरके अस्तित्वका इन्कार करते हैं (६) जैन होना परले दरजेकी कायरता है। (७) मनुष्योंके साथ उनका वर्ताव बडा ही निर्दयी होता है। (८) बडे शूरवीर राजा महाराजा चंद्रगुप्त आदि जैन धर्मके माननेवाले थे उनको जैनी नहीं प्रकट किया।

इसप्रकार अनेक आक्षेप जैन धर्मपर किये हैं इसलिये हरएक स्थानपर सभा होकर प्रस्ताव करने चाहिये कि ये आक्षेप निर्मूल हैं और लालाजीको इसकी नकल लाहौर भेजकर इतिहासमें सुधारा करनेकी सूचना करनी चाहिये।

* * *

**देशमें फिर ऐक्य।**

राष्ट्रीय महासभामें कार्यकर्ताओंमें धारासभा प्रवेश अप्रवेशपर बड़ा भारी अनैक्य होरहा था जिसके निवटेरेके लिये अभी देहलीमें खास महासभा होगई जिसमें ऐक्य होनेका प्रास्ताव होगया है अर्थात् जिनको धारासभामें जाना हो वे खुशीसे जा सकते है व मत भी दे सकेंगे। मौ० महमदअलीके असीम प्रयत्नसे ही यह समझौता होगया है। इस महासभामें सविनय भंग करनेकी व्यवस्थाके लिये एक कमेटीका निर्वाचन तथा सभी प्रकारके ब्रिटिश मालका बहिष्कार करनेका भी प्रस्ताव बहुमतसे होगया है। इसीसे देशमें फिर नवीन जीवनका प्रचार होगा। देशके अनेक नेता जेलसे छूटे हैं व महात्मा गांधीजी भी शीघ्र ही छूटनेकी अनेक खबरें आरही हैं। बहुत करके महात्माजी दिसम्बर तक अवश्य छूट जांयगे। स्वीडनका १५ लाख रुपयेका नोबल प्राइज भी महात्माजीको मिलनेकी संभावना प्रकट हुई है। शांति और सुलहके सिरताज महात्मा गांधीजीको जितना भी आदर मिले कम है।

* * *

## શા. છોટાલાલ ગાંધીનો છુટકારો ને માનપત્રો.

નાગપુરમાં રાષ્ટ્રીય વાવટાની રક્ષા માટે એક વર્ષની જેલ યાત્રાએ ગયેલા શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી (અંકલેશ્વર) બીજા બધા સ્વયંસેવકોને સરકારે છોડી દીધા તે પ્રમાણે એઓ પણ છુટા થવાથી એમનું અપૂર્વ સ્વાગત તા૦ ૬-૯-૩ ને દિને અંકલેશ્વરની પ્રજા તરફથી થયું હતું. અને પ્રજા તરફથી એક માનપત્ર તેમજ અંકલેશ્વરના વીસા મેવાડા દિ૦ જૈન ભાઈઓ તરફથી એક માનપત્ર ખાદીપર છાપેલું અર્પણ કરવામાં આવ્યું હતું. જૈનોના માનપત્રની નકલ નીચે મુજબ છે. ભાઇશ્રી છોટાલાલ ગાંધીને જેલમાં છાપખાનાના મશીનનું ચક્કર ફેરવવાનું વગેરે અઘરું કામ સોંપવામાં આવ્યું હતું, તેથી એમનું શરીર કૃષ થઇ ગયું છે, છતાં પણ નિડરપણે જેલનું સંકટ વેઠી વિજય મેળવી વ્હેલા સ્વગૃહે આવી શક્યા છે. એજ મુજબ આમોદ નિવાસી ઠાકોરલાલ હરજીવનદાસ પણ છૂટી આવ્યા છે, જેમનું પણ આમોદમાં સારૂં સ્વાગત થયું હતું.

### માનપત્રની નકલ

ભારતમાતના મોઘેરાં સંતાન જૈનકુલદીપક, ધર્મબંધુ.

**શા૦ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી.**

જય જિનેન્દ્ર.

માન્યવર મહાશય,

અહિંસા પરમો ધર્મઃ એ જૈનના મહાન સિદ્ધાંતને અનુસરીને મહાત્મા ગાંધીજીએ આદરેલા યુદ્ધમાં જોડાઇ, અહિંસાત્મક રીતે વિજય પ્રાપ્ત કરી શકાય છે, એવો પાઠ આખી આલમને પઢાવવામાં જે કાંઇ તમોએ ભાગ ભજવ્યો છે, તેની અમો ખરા અંતઃકરણથી પ્રશંસા કરીએ છીએ.

જૈનોને હિંસાત્મક યુદ્ધની અરૂચિ હતી ખરી, પણ આ યુદ્ધ તરફ અમને ધાર્મિક દ્રષ્ટિએ પણ માન છે; કેમકે તેમાં હિંસાને જરાય પણ સ્થાન નથી.

મોજશોખ, એશઆરામ, અને જહોજલાલીને લાત મારી પ્રજાના હિતાર્થે, અને ભારત માતની સેવા કાજે આપે સંકટ વેઠવા હામ ભીડીને જે અવર્ણનીય સેવા બજાવી છે, તેને અમો ખરા જીગરથી વધાવી લઇએ છીએ.

રાષ્ટ્રીય ધ્વજના માન અને રક્ષણની હાકલનો આપે કુટુંબ પરિવાર અને ઘરબારનો વિચાર નેવે મુકી જે સચોટ જવાબ વાળ્યો તેમાં અમો તમારી નિઃસ્વાર્થતા, હિંમત અને દેશપ્રેમ નીરખી શકીએ છીએ.

આ વખતે આપે જે સેવા બજાવી છે, તેમાં અમો જ્ઞાતિબંધુ તરીકે ગર્વ લઇએ છીએ કે, આપે જૈન કોમને ઉજાળી છે.

આપના ગુણોનું ગાન કરવા અમારામાં તાકાત નથી, છતાંએ આપનું ચારિત્રજ તેમ કરવા અમને પ્રેરે છે.

અમો ઇચ્છીએ છીએ કે આ ધર્મયુદ્ધમાં આપ વિજયદેવીને વરો, અને ભવિષ્યમાં પણ ધર્મ અને દેશને ખાતર પાછીપાની ન કરો, તેમજ જૈન કોમને દીપાવી તેનું ગૌરવ વધારવા પ્રયત્ન કરતા રહો; અને ભવિષ્યની પ્રજાને પાઠ પઢાવો કે **નિઃસ્વાર્થ સેવાજ મોક્ષનો માર્ગ છે.**-

અંતમાં અમારી હાર્દિક અભિલાષા છે કે પરહિતના ઉત્તમ કાર્યો આદરવા સદૈવ આપને બળ, બુદ્ધિ અને દીર્ઘાયુષ્ય પ્રાપ્ત થાઓ એવું ઇચ્છી આ અલ્પ **માનપત્ર** આપને અર્પીએ છીએ તે સ્વીકારી અમોને કૃતકૃત્ય કરશોજી.

લી૦ અમો છીએ-

અંકલેશ્વરના વીસા મેવાડા દિગંબર જૈનો.

તા૦ ૬-૯-૨૩

---

**पानीपत**-संस्कृत धर्म शिक्षा विभागके लिये परदेशी छात्रोंकी आवश्यकता है। सं० प्रवेशिकामें पढनेवालेको १०) मासिक छात्रवृत्ति मिलेगी। जैकुमारसिंह जैन मंत्री, जैन हाइस्कूल पानीपत (पंजाब)

# जैन समाचारावलि।

**इन्दौरमें**–रा० विश्वविद्यालयकी परीक्षा इसवार आगामी जनवरीमें होगी। परीक्षार्थी एक आना भेजकर आवेदन पत्र मगालेवें।

**नवीन ब्रह्मचारी**–ब्र० हीरालालजीके उपदेशसे नांदगांव निवासी सेठ खुशालचंदजी पहाड़ेने भाद्रपद सुदी २ को सातवीं ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण की है। आप एक वर्षसे पांचवी प्रतिमा धारण करके उदासीन वृत्तिसे घर पर रहकर धर्मध्यान करते थे और अब ब्रह्मचारी होगये हैं। उस दिन आपने ५००) औरंगाबाद पाठशालाको दिये तथा नांदगांवमें दूसरी प्रतिमा धारण करनेवाली स्त्रीको ५००) देना स्वीकार किया था।

**दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा**–का वार्षिक अधिवेशन कार्तिक मासमें कोल्हापुरमें होगा।

**वर्धामें**–जैन सेतवाल संगठन सभा स्थापित होकर उसका जलसा आश्विन वदी ९–६ को होगा।

**दो आदिसागर मुनि**–दक्षिणमें विराजमान हैं। एकने नसलापुर ( बेलगांव )में व दूसरेने आलते गांव ( हातकलंगडा स्टेशनसे ३ मील) में चातुर्मास किया है।

**तिजारा जैन पाठशाला**–के लिये पं० पद्मावतीप्रसादके प्रयत्नसे २०८०) का स्थायी फंडके लिये चंदा हो गया है।

**जैनेंद्र लघु कौमुदी**–पं० मनोहरलालजी शास्त्रीने तैयार की है और वे प्रकट करना चाहते हैं। शास्त्रीजी आजकल जैपुर ब्र० आश्रममें हैं।

**मूडबिद्रि**–की जैन संस्कृत पाठशालाको सेठ पूरनसाहजी प्रतिवर्ष १००) व आरानिवासी बाबू धरनेंद्रदासजी १२०) प्रति वर्ष देते हैं। कर्नाटकमें यह एक ही संस्कृत पाठशाला अच्छा कार्य कर रही है।

**भारतवर्षीय दि० जैन परिषद्**–कि जिसकी स्थापना गत देहली महोत्सवके समय हुई थी उसका कार्य चालू हो गया है। ला० रतनलालजी एम० ए० सहायक मंत्री बिजनौरसे सब प्रकारका पत्रव्यवहार हो सकता है। परिषद्का "वीर" पत्र भी शीघ्र ही प्रकट होनेकी तैयारी होरही है।

**खंडवा**–में सेठ गोपीकीसनजी देवकिसनजीके प्रयत्न व धन व्ययसे पोरवाड़ जातिके ९ गांवोंमें तडें थीं वे मिलगई हैं।

**चंपापुरमें**–श्री वासुपूज्य तीर्थंकरके पंचकल्याण हुए थे जिनमें निर्वाण कल्याणक भादों सुदी १४ को हुआ था। इसी दिन यहां मेला व भागलपुरमें रथयात्रा भी होती है।

**नागपुर**–प्रांतिय खंडेलवाल सभाका वार्षिक अधिवेशन आगामी मगसिर वदी ९–६–७ को रामटेकजीमें होगा।

**पानीपत**–में रक्षाबंधनके दिन ९२०)का दान मिला था जो काशी० स्या० विद्यालय, श्राविकाश्रम बम्बई आदि संस्थाओंको भेजा गया है।

**स्वर्गीय दानवीर**-सेठ माणिकचंदका चित्र जिस किसी बोर्डिंग, पाठशाला आदिमें चाहिये वे श्राविकाश्रम तारदेव बम्बईको शीघ्र ही लिखें जिससे एक साथ विशेष कापियां तैयार करवाकर भेजी जांय।

**वर्धामें**-दि० जैन बोर्डिंगका ११वां वार्षिकोत्सव आश्विन वदी ६को सेठ लालचंदजी छिंदवाड़ाके सभापतित्वमें होनेवाला है।

**औरंगाबाद पाठशालामें**-श्रावण सुदी १५को पूजन होम आदि होकर सब छात्रोंने यज्ञोपवित धारण किया था।

**जन्मदिनकी खुशीमें जलसा**-दानवीर रा० ब० सेठ कल्याणमलजी इंदौरने अपने जन्मदिन भाद्रपद वदी ९ को अपनी तिलोकचंद जैन हाईस्कूलके छात्रोंको पारितोषिक वितरणका जलसा होल्कर स्टेटके प्रधानमंत्रीके सभापतित्वमें किया था तब राज्यके अनेक पदाधिकारी व सर सेठ हुकमचंदजी आदि उपस्थित हुए थे व छात्रोंने हिन्दी, अंग्रेजी संवाद गायन तथा व्याख्यान किये थे। सेठजीकी तरफसे भी इन्दौरमें पांच संस्थाएं सुचारु रूपसे चल रही है।

**छात्र चाहिये**-सागरकी सतर्क० जैन पाठशालाके लिये २५ छात्रोंकी आवश्यकता है। जो हिंदीकी योग्यता रखते हों व जिन्हें ८ वर्षका अवकाश हो अर्जी भेजें। गणेशप्रसाद वर्णी जैन सं० पाठशाला, सागर।

**तीर्थक्षेत्र कमेटी**-की ओरसे तीर्थरक्षा फंडका प्रति घर पीछे १) उगाहनेके लिये पांच प्रांतमें पांच प्रचारक भेजे गये हैं।

**महावीरजी**-क्षेत्रके सुप्रबंधके लिये २१ सज्जनोंकी कमेटी नियुक्त हो गई है। कमेटीमें १० मेम्बर तीर्थक्षेत्र कमेटीके, १० जयपुर पंचायतके व १ भट्टारकजी नियत हुए है।

**बम्बई**-में ऐलक पन्नालालजी दि० जैन सरस्वति भवनका कार्य अच्छा चल रहा है।

**परवार समैये**-भाइयोंको परवार समाजने अपने रीतिरिवाजोंके साथ सामिल करनेका निश्चय किया है और इसके लिये समैया भाइयोंसे पत्रव्यवहार होरहा है। समैया परवार भाई यदि परवार भाइयोंके रीतिरस्म पालना स्वीकार करेंगे तो वे परवार समाजमें अब सामिल हो जांयगे। यह उचित ही है।

**वर्षगांठमें दान**-ला० शिवचरणलाल जैन जसवंतनगरने अपने जन्मदिनकी खुशीमें १०१) संस्थाओंको दान भेजा है।

**अमृतसर निवासी**-बा० मुसद्दीलालजीने उदैपुर दि० जैन विद्यालयके सभी छात्रोंके लिये पढनेकी पुस्तकें भेंट भिजवा दी हैं।

**तीन पुस्तकें मुफ्त**-भूगोलभ्रमण भ्रांति नामक पुस्तकके तीन भाग पं० प्यारेलालजी अलीगढ़ने तैयार करके प्रकट किये हैं वे विना मूल्य ला० जम्बूप्रसादजी प्रद्युम्नकुमारजी रईस सहारनपुरको लिखनेसे मिलते हैं।

**उपकरण भी बनवा देते हैं**-यदि मंदिरोंके लिये सोना चांदीके छत्र चमर चौकी आदि व जरी कामके उपकरण बनाने हो तो वे तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग बम्बईकी ओरसे बना देते हैं। कमेटी सिर्फ कमीशन लेकर यह कार्य कर देती है।

**नसीराबाद**–में ब्र० चांदमलजीके प्रयत्नसे सेठ लक्ष्मीचंदजीने आषाढ सुदी ५ को उदासीनाश्रम अपने खर्चसे खोलदिया है व खुद भी इसी आश्रममें रहकर धर्मध्यान करते हैं ।

ઇડર–માં જૈન યંગ મેન્સ એસીસીએશન તરફથી સભા થઇને લાલા લજપતરાયજીએ પેાતે બનાવેલા ભારત ઇતિહાસમાં જૈનધર્મ પર જે આક્ષેપ કરેલા છે, તેનેા વિરેાધ કરવામાં આવ્યેા અને એ પુસ્તક સુધારવાને માટે લાલાજીને પ્રાર્થના કરનારેા ઠરાવ પાસ થયેા હતેા.

**આબુજી ક્ષેત્ર**–પર યાત્રિઓની આવક ઓછી હેાવાથી આવક કરતાં ખરચ વધુ થાય છે. તેથી મુનીમ હજારીલાલજી મુનીમ ખર્ચની ટીપ માટે ગુજરાતમાં ભ્રમણ કરી રહ્યા છે. અને તેમને ઓરાણ પ્રાન્તિજના ૩૩ ગામેામાંથી રૂ. ૭૭૬ાની મદદ મળી છે.

**ક્ષમાવણીના** કાર્ડ–ગુજરાતી ભાષામાં બાર આને સેા લેખે મંત્રી ગુજરાત દિ૦ જૈન મંડળ, દિ૦ જૈન મંદિર ગુલાલવાડી, મુંબઇને લખવાથી મળી શકે છે.

**એમાં શું**–નામનેા જે લેખ ગયા અંકમાં છપાયેા છે, તેમાં નીચે મુજબ સુધારેા કરી લેવેા. " પેથાપુર મુકામે મળેલા પંચમાં રા૦ મેાહનલાલ શેઠાઇ છેાડયા પછી શેઠ તરીકે ચુંટાયા હતા. " તેને બદલે દરેક ભાઇયેાએ શેઠ તરીકે રા૦ ગગલદાસ વીરચંદને નમ્યા હતા " એમ વાંચવું.

ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી.

**एक क्षत्रीने सप्त व्यसनका त्याग** किया–ठाकुर रामपालसिंहजी (आगरा)को हमने जंगलमें बंदूक लिये शिकार खेलने जाते देखकर आपको जंगलमें एक घंटा समझाया और दूरसे एक हिरनीके बच्चेको भयसे कड़खडाते भागते दिखाकर हिंसाके त्यागको कहा और सप्त व्यसनका स्वरूप समझाया जिससे जमनाजीमें खड़े होकर उसने यावज्जन्मको सप्तव्यसनका त्याग किया–बाबूराम मंत्री जीवदया–अहारन ।

**सर सेठ हुकमचंदजीको म्हैसुरमें मानपत्र**–श्रीमान सेठ हुकमचंदजी जैनबद्रीकी यात्राको जाते हुए मैसूर गए थे तब वहांके भाइयोंने जो मानपत्र दिया था वह यह है–

**नकल मानपत्र ।**

आपकी दानशीलता धर्मबुद्धि सदाचार व्यापारनैपुण्य आदि गुणोंको सुनकर हम लोगोंको बहुत दिनोंसे श्रीमानका दर्शन करनेकी उत्कंठा थी । आज आपने यहां पदार्पण किया है इसलिये हमलोग आजके दिनको सुदिन समझते हैं । आप इंदोरमें महाविद्यालय, धर्मशाला, औषधालय, उदासीनाश्रम, कंचनबाई श्राविकाश्रम, बोर्डिंग आदि संस्थायें खोलकरके जैनसमाजको बडा उपकार किया है । और भी समाजोपयोगी अनेक कार्योंके लिये श्रीमानने कई लाख रुपया खर्च किया है । जैन समाजमें आपसरीखे दानशूर मिलना बहुत दुर्लभ है । हमको गर्व है कि आप जैसे नररत्न हमारी जैन समाजमें है । आज हम हमारा सौभाग्य मानते हैं कि आप सरीखे सधर्मी धर्मात्मा पुरुषका सत्कार करनेका मौका हमको मिला है । हमारी सेवामें जो कुछ त्रुटि होवे उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं । यह भी प्रार्थना करते है कि यहां पर हरसाल दशहरेमें होनेवाली मैसूर प्रांतीय दिगंबर जैन सभाधिवेशनमें सभापतिस्थानको सुशोभित करनेके द्वारा और एकवार अवश्य आप दर्शन देनेकी कृपा करें ।

अंतमें हम श्री वीतराग भगवानसे प्रार्थना करते हैं कि आप दीर्घायुरारोग्य भाग्यशाली होकर संतुष्ट रहे । मैसूर दि० जैनसमाज ।

ता० २६–७–२३

**उपदेशकोंकी पोशाक**—अन्य समाजकी भांति जैनसमाजकी तरफसे तथा जीवदया सभा अहारनकी तरफसे भी अहिंसा प्रचारार्थ उपदेशक भ्रमण करते हैं। जनतामें नुक्तेचीनीका परीक्षा-प्रधानगुण बढ़ता जाता है और कोट, बूट, फेल्ट केप, सीपके बटन, ऊनका तथा विदेशी वस्त्र आदि व्याख्यानदाताओंको नहीं पहिरने चाहिये इससे जनसाधारण पर व्याख्यानका असर न होकर उनकी मजाक उड़ाई जाती है। कई उपदेशक अंग्रेजी बाल रखा लेते हैं, शृंगार करते हैं, रे, तू, छि, लानत, अफसोस, धिक्कार, आदि कड़े शब्दोंका जनता पर सभामें प्रयोग करते हैं। इससे शिक्षित समाजकी दृष्टिमें उनकी ग्रामीणता प्रगट होती है इसलिये ऐसा नहीं करना चाहिये। जैन समाज धार्मिक समाज है। कई व्याख्याता भंग पीते, विना छना जलसे स्नान आदि करते, बाजारका भोजन करते, अष्टमी, चतुर्दशीको भी पान आदि हरी खाते, आलू, गाजर आदि कंदमूल, गोभी, बथुआ, आदिका साग खाते हैं, जिससे भी जैन जनता पर उनका प्रभाव नहीं पडता है। अतएव उपदेशकोंको सब प्रकारसे स्वदेशी वस्त्र—अपने देशकी पोशाक पहिनते हुए, अभक्ष भक्षण आदिसे सदा बचना चाहिये और जनसाधारणसे अपने भीतर एक असाधारणता पैदा करना चाहिये जिससे अमीर गरीबसबपर प्रभाव पड़े।

**बाबूराम मंत्री** जीवदया अहारन।

**सचित्र खास अंक**—आगामी वीरनिर्वाण संवत २४६०के प्रारम्भमें भी प्रतिवर्षकी भांति हमारा विचार 'दिगम्बर जैन' का सचित्र खास अंक प्रकट करनेका निश्चित रूपसे है इसलिये हमारे सुज्ञ लेखकोंको हम अभीसे आमंत्रण करते हैं कि वे हिंदी, संस्कृत, गुजराती, मराठी व अंग्रेजी भाषा के उपयोगी लेख शीघ्र ही तैयार करके भेजें व कोई भाई अप्रकट प्राचीन तीर्थोंके, संस्थाओंके व प्रसिद्ध दानी धर्मात्माओंके चित्र व परिचय भेजेंगे तो उनको भी सहर्ष स्थान दिया जायगा। इस वर्ष भी करीब १००—१२५ पृष्ठका खास अंक निकालनेका हमारा इरादा है। आशा है हमारे लेखकगण व ग्राहकगण हमें इस कार्यमें अवश्य सहायक होंगे।

**आंखका वैद्यक** शर्तिया इलाज मुफ्त—वैद्यभूषण कृष्णवद्दनी बाईकी मंड़ी "आगरा" आंखका हरप्रकारका इलाज विना फीस करते हैं। कई बड़े अस्पताल और सिविल सर्जनके जवाब दिये हुए मरीजोंको आपने बिलकुल फायदा कर दिया है, उनके मकानपर दवा लेने और तस्दी कराने जाता है उससे न फीस और न दवाकी कीमत लेते हैं। मकानपर भी फीस देना आवश्यक नहीं हैं आप एक अच्छे क्षत्रीवंशके धनवान व्यक्ति हैं। परोपकारार्थ सच्चे दिलसे सेवा करते हैं। मुझे आंखके रोहोंको एक अंग्रेज अ० सर्जनने जवाब दे दिया था, आपने दो हप्तोंमें बिलकुल ठीककर दिया।

बाबूराम मंत्री जीवदया अहारन।

# दशलक्षण धर्म ।

## १. उत्तम–क्षमा ।

सोरठा ।

**जिनवर पद उर धार, धर्मतत्त्व वर्णन करूं ।**
**होते भवसे पार, जग–जन जिसको धारकर ॥ १ ॥**

पद्धड़ि ।

सद्दर्शन–ज्ञान–चरित्र जान, तीनोंको उत्तम धर्म मान ।
साधक इनके दश और धर्म, क्षम, मार्दव, आर्जव सत्य कर्म ॥ २ ॥
है शौच व संयम, तप व दान, आकिंचन, ब्रह्मचर्य प्रधान ।
यह दशधा धर्म कहा जिनेश, सेवत पावें जन सुख अशेष ॥ ३ ॥
जो चाहें शिवपुरका निवास, अरु रहते जगसे नित उदास ।
है त्याज्य उन्हें वह क्रोध क्रूर, जो देता जगको दुःख भूर ॥ ४ ॥
इस क्रोध दुष्टने किया नाश, जग–जीवोंको नित दिया त्रास ।
यह पापी लेता प्रेम छीन, कर एक हृदयके तीन–तीन ॥ ५ ॥
पितुसे करवाता पुत्र भिन्न, पति–पत्नी बंधन छिन्न–भिन्न ।
भाई–भाईमें रहे जंग, नहिं होने देता रोष संग ॥ ६ ॥
गुरु–शिष्य परस्पर करें रार, स्वामी–सेवक हैं खांय खार ।
मित्रों–मित्रोंमें खेंच तान, तलवार निकलती छोड़ म्यान ॥ ७ ॥
संयम–तप–तरुको क्रोध आग, है भस्म करे छिन मांहि लाग ।
दीपायन मुनि–मन लगी जाय, है दिया द्वारिकाको जलाय ॥ ८ ॥
क्रोधी–आत्मा हो प्रथम नष्ट, होवे न शत्रु चाहे विनष्ट ।
क्रोधाग्नि बुझाता नहीं नीर, कर शान्त सकें नहिं बड़े वीर ॥ ९ ॥
रहती मनके जब क्षमा बीच, झट भगता–फिरता क्रोध नीच ।
जो करता इसपर सत्य–प्यार, देती भव–पारावार तार ॥ १० ॥
दुर्गति–पिशाचिनीको भगाय, गुण–गणकी करती नितसहाय ।
ज्ञानी इसकी महिमा अपार, सब तत्त्वोंमें है यही सार ॥ ११ ॥

रत्नत्रयकी जगमगे ज्योत, मनमांहि करे है जब उद्योत ।
मिथ्यात्व-ध्वान्तका करे नाश, चिन्तामणिसी जब रहे पास ॥ १२ ॥
असमर्थ करें यदि आय रोष, उनके क्षन्तव्य तथापि दोष ।
शशिसम शीतल जिनका स्वभाव, वे धन्य नरोत्तम जगतराव ॥ १३ ॥

**जिनके शांति समीप, ऐसे जन इस लोकमें ।**
**होते मुक्ति महीपें, जगत-पूज्य होकर सदा ॥ १४ ॥**

* * *

## २. उत्तम-मार्दव ।

**मान नशे में भूल, गिने बडा जो आपको ।**
**अपने पथमें शूल, बोता अपने हाथ से ॥ १ ॥**

कुलसे हूं उन्नत, रूपवान, धन है मेरे, मैं बल-धाम ।
विद्यासे उन्नत तपोवान, हूं जाति-समुन्नत, सर्वरेमान ॥ २ ॥
जगमें मेरा ऐसा प्रभाव, दरवाजे आते रंक-राव ।
होता जिसपर मेरा प्रकोप, मानो उसका तुम हुआ लोप ॥ ३ ॥
इस भांति नशेमें होय मस्त, निज-जीवन करता अप्रशस्त ।
चक्रीका भी नहिं रहा मान, कब कौन हुआ इसका न ध्यान ॥ ४ ॥
यह अधेला चलती नहीं साथ, जाते सब अंत पसार हाथ ।
इस भूपर बहुते गये होय, वे धन्य, जु भवको गये खोय ॥ ५ ॥
कुल, जाति, परिग्रह, धन, व रूप, नहिं चेतनके हैं ये स्वरूप ।
पर द्रव्योंका अभिमान त्याग, नित आत्म-गुणोंमें करो राग ॥ ६ ॥
त्रसकी थावरसे लही काय, तिसपर भी नरता[६] मिली आय ।
खोवो मत मान-कषाय मांहि, यह रत्न गया फिर मिले नांहि ॥ ७ ॥
मानीसे सब ही रहें रुष्ट, मा, बाप व भाई कहें दुष्ट ।
गुरु-जन भी करते नहीं प्यार, धिक्कार हैं सब बार-बार ॥ ८ ॥
इस कारण छोड़ो मान, मित्र ! चितपर मृदुताका करो चित्र ।
तिहुं लोकमें मृदुता कही सार, कर देती भवसे शीघ्र पार ॥ ९ ॥

**करके मान कषाय, जो नहिं जीते जा सकें ।**
**छूते आकर पाये मार्दव, धर्म प्रभावसे ॥ ॥ १० ॥**

---

१ अन्धकार । २ क्रोध । ३ क्षमा करने योग्य । ४ राजा । ५ पृथ्वी । ६ मनुष्यपना ।

## ३. उत्तम आर्जव।

**करके मायाचार, दुर्गति पाता जीव है।**
**होता भवसे पार, आर्जव धर्म प्रभावसे ॥ १ ॥**

मन–वच–कायाको एक रूप, करे आर्जव धर्म कहो अनूप।
यह माया–शल्य चुभे सदीव, व्रत पालत भी व्रत रहित जीव ॥ २ ॥
माया ठगनीकी प्रेम–फांस, करवाती तिर्यग्योनि वास।
जहां मिलती भू, जल, अनल, काय, वायु व वनस्पतिकाय हाय ॥ ३ ॥
लट, बिच्छू, शूकर, सर्प, श्वान, मक्खी व ततैयें भ्रमर जान।
बिल्ली, खर[१], बंदर, भैंस, गाय, कर माया इनमें पड़ें जाय ॥ ४ ॥
जहं नित्य निरन्तर नये त्रास, हैं एक अन्यके बनें ग्रास।
करि[२]पर केहरी[३] करता प्रहार, नित खाता बगुला मत्स्य[४] मार ॥ ५ ॥
नित सर्प नकुल का रहे बैर, बिल्ली से चूहों की न खैर।
चेतन होकर भी जड़समान, कुछ निज–परकी न रहे पिछान ॥ ६ ॥
यह माया दुखदाई महान, क्यों करते होकर बुद्धिमान्?।
नर–भव नहीं मिलता बार-बार, छल-कपटमें व्यर्थ न करो ख्वार ॥ ७ ॥

**नहिं होता विश्वास, कपटीका इस लोकमें।**
**करते सब सन्मान, ऋजुता[५]धारी जीवका ॥ ८ ॥**

* * *

## ४ उत्तम सत्य।

**बोलो बचन रसाल, नहिं इसमें हो खर्च कुछ।**
**कर्कश शब्द निकाल, जगमें होते निंद्य क्यों ॥ १ ॥**

इक देश, सकल वा सत्य पाल, अतिचार सत्यके पंच टाल।
मिथ्या उपदेश व कूट[६] लेख, नहीं कहो किसीकी बात देख ॥ २ ॥
हरना तु धरोहर कहा पाप, पर आशय प्रकट न करो आप।
भय–लोभ–क्रोधके वशी होय, नहिं मिथ्या भाषण करो कोय ॥ ३ ॥
निर्दोष कहो तुम सदा बैन, परको दुखदे, नहिं गिनो चैन।
जो जिह्वा सत्य न कहे बात, मुखमें वह पन्नग[७] सी दिखात ॥ ४ ॥

---

१ गधा। २ हाथी। ३ सिंह। ४ मछली। ५ सरल परिणामी। ६ झूंठी बात लिखना। ७ सर्प।

पन्नग–विष नाशे है शरीर, लगता चेतनमें बचन तीर।
पन्नग विषके हैं सो उपाय, बचनोंका विष उतरे न हाय ! ॥ ५ ॥

माला, मणि, चन्दन, शशि[1], समान, या मृदु भाषाको सुधा जान।
चिंतामणि वा वह कल्पवेल, है स्वर्ग–मार्ग या मोक्ष गैल ॥ ६ ॥

चित चातकको वह स्वाति बूंद, मन फटे हुएके लिये गूंद।
हृदयाग्नि[2]लको घन[3]के समान, करवाती सबको सुधा–पान ॥ ७ ॥

**सत्य–रसायन पाय, खाओ हृदका रोग तुम।**
**नहिं कुछ अन्य उपाय, भव-सागरसे तिरनका ॥ ८ ॥**

* * *

## ५. उत्तम शौच।

**धर चित नित संतोष, दुखद लोभको त्यागकर।**
**ज्ञानादिक धन पोष, सब सुखका जो मूल है ॥ १ ॥**

यह लोभ दवानल हृदय बीच, जब जगती, करती कार्य नीच।
व्रत, जप, तप, संयम, ज्ञान, दान, सब जलकर होते रज समान ॥ २ ॥

धन–ईंधनको है सतत पाय, लोभानल बढ़ती चली जाय।
चक्रीपदके भी नहीं भोग, कर सकते उसको शांत शोक ! ॥ ३ ॥

इस लोभानलसे दग्ध जीव, अतिनिंदित कार्य करें सदीव।
छल कपट निरंतर लूट–मार, पर तनु काटें ले खड्ग धार ॥ ४ ॥

जो पैदा करते मात–तात, लोभी उन तकका करें घात।
जग–सम्पतिको चाहे प्रत्येक, हिस्सेमें कण आता न एक ॥ ५ ॥

शुचि चिन्मणि–मंदिर बना देख, ज्ञानामृत–वापी भरी, पेख।
नित लोल–कलोल करें विवेक, नहिं बाधा आती पास एक ॥ ६ ॥

डुबकीको एक लगाय मित्र, देखो ! फिर आनन्द है विचित्र।
जो डूब गये मझधार माँहि, संसारमें उनका पता नाँहि ॥ ७ ॥

**शौच–सुधाकर पान, लोभ–दाह मेटो दुखद।**
**शुद्धातमका ध्यान. करके पहुंचो शिवनगर ॥ ८ ॥**

---

१ चंद्रमा। २ हृदयकी अग्नि। ३ मेघ।

## ६. उत्तम संयम।

**पंच स्थावर काय, अरु त्रसका रक्षण करो।**
**सेवो न विषय कषाय, पञ्चेन्द्रिय-मन वश करो ॥ १ ॥**

करके प्रमाद अति क्रूर जीव, त्रस थावर घात करें सदीव।
जो मृग-गण करते तृण अहार, उनपर भी क्रूर करें प्रहार ॥ २ ॥
माता सम नित जो दुग्ध दान, देती हैं गायें हर्ष मान।
उनके तनुको भी कर विनष्ट हत्यारे खाते अति निकृष्ट ॥ ३ ॥
निज-तनमें सुईका विघात, है दुखदाई जब जग विख्यात।
तब निज सम परके प्राण जान, कर रक्षा देओ अभय दान ॥ ४ ॥
अरि तनका भी न करो विनाश, तज द्वेष करो निजगुण विकाश।
बहु-जीव विघाती कार्य टाल, कर करुणा कहलाओ दयाल ॥ ५ ॥
करि मत्स्य भ्रमर, मृग अरु पतंग, इक-इक इंद्रियवश नशें अंग।
नरका पांचों छेदें शरीर, नितचित्त चलाता अतुल तीर ॥ ६ ॥
इनको है संयम यम समान, धर निग्रह करलो रे! सुजान।
इनका निग्रह कर साधु-वीर, पहुंचे भव-पारावार-तीर ॥ ७ ॥
**संयम पंच प्रकार, पंचम-गति कारण लखो।**
**भवि-जन इसको धार, शास्वत आनंद रस चखो ॥ ८ ॥**

* * *

## ७. उत्तम तप।

**लो इच्छाको रोक, विषयोंमें जो ले गिरे।**
**तपको कर मुनि-लोग, नित आतम निर्मल करें ॥ १ ॥**

मुनि गजसम मनको मत्त मान, उत्तमतप अंकुशसम पिछान।
करिणी[1] सम करेणु[2]से हटाय, शुभ-ध्यान रूप-संकल लगाय ॥ २ ॥
व्रतिपरिसंख्या[3]से कर प्रहार, रस त्याग निरस देते अहार।
अनशन तपवश आहार रोक, मन निग्रह करते साधु लोग ॥ ३ ॥
आकुलित देख किंचित् अहार, कर काय-क्लेश देते विचार।
निग्रह करते भी बार-बार, मुनि माघ सदृशको करे रुवार ॥ ४ ॥

---

१ हथनी। २ इन्द्रियों। ३ तीसरा तप।

चालिस—शेरों (सेरों) से करे युद्ध, वह मन—निग्रह करसके बुद्ध।
इससे ही मनके दमनहेत, गृह तज नित मुनि रहते सचेत ॥ ५ ॥
लें दंड, विनय धोर महान्, गुरु सेव करें नितप्रीति मान।
अभ्यास ज्ञानका करें नित्य, होते त्यागी जन लख अनित्य ॥ ६ ॥
नित आत्म—ध्यानमें रहें लीन, जग लीलाकी कर छान—बीन।
इस भांति सतत तपकर मुनीश, हो मुक्त विराजें जगत—शीश ॥ ७ ॥
**यों तप हितकर जान, करो सदा सब चतुर जन।**
**दुर्लभ नरभव मान, व्यर्थ विसारो क्षण नहीं ॥ ८ ॥**

* * *

## ८ उत्तम त्याग।

**त्याग कहो या दान, देना उत्तम सर्वदा।**
**हो निज—पर कल्याण, व बढ़े देय[1] वस्तु सदा ॥ १ ॥**
इस भव वनमें नित भ्रमत जीव, दुख सहते रहते हैं अतीव।
बहुव्याधि व्यथित तन विन आहार, भय—भीत सदा अज्ञान धार ॥ २ ॥
बहुते ज्वरसे पीडित सदीव, बहु प्लेग—रोगसे नशें जीव।
बहुतोंका 'क्षय' करता विघात, बहुतोंपर रहती कुपित 'वात' ॥ ३ ॥
बहुतोंको नाशे कुपित 'पित्त', बहुतोंको 'कफ' करता अचित्त।
बहु—उदर शूल से—तड़फड़ाय, मरजाते करते हाय! हाय!! ॥ ४ ॥
बहु कासै[2] श्वास वश व्यथित—काय, निज जीवनको देते नशाय।
औषधि दे करना रोग मुक्त, है प्राण—दानके तुल्य युक्त ॥ ५ ॥
औषधि देना है मुख्य धर्म, वट तरुवत फलता यह सुकर्म।
जो औषधि देते धीर वीर, वे पाते हैं उत्तम—शरीर ॥ ६ ॥
विन अन्न जगे जब उदर आग, बहु जन देते तब प्राण त्याग।
जो क्षुधित देख दें अन्न दान, वे होते हैं सम्पति—निधान ॥ ७ ॥
पट बिन जो रहते सतत तंग, पट देकर उनका ढको अंग।
प्यासेको शीतल जल पिलाय, झट तृषा—अनलको दो बुझाय ॥ ८ ॥
ज्योंके हरि पंजोंमें हिरन, भयभीत हुआ करता रुदन।
त्यों अशरणको भयभीत पाय, झट—पट ही उरमें लो लगाय ॥ ९ ॥

---

१—दान देने योग्य वस्तु। २ खांसी।

बिन आत्म-ज्ञानके जगत-जीव, अति क्लेषित रहते हैं सदीव ।
सुख-आशा-वश नित दुखद कर्म, करते बिन समझे आत्म-मर्म ॥ १० ॥
भ्रम-नाशक नित दो ज्ञान-दान, जिससे हो निज-पर की पिछान ।
छात्रोंको नित दो शास्त्रदान, विद्यालय खोलो मिल महान् ॥ ११ ॥
संग्रह ग्रंथोंका करो मित्र, ये रतन तुम्हारे हैं विचित्र ।
जो देते हैं नित ज्ञान-दान, वे होते बहु ज्ञानी महान ॥ १२ ॥

**करो स्व-पर-कल्याण, देकर उत्तम दानको ।**
**नहिं चाहो निज मान, फल नाशक जो दानका ॥ ९३ ॥**

* * *

## उत्तम-आकिंचन ।

**ग्रहण किया जो देह, ममता उससे भी तजो ।**
**किसके गृहिणी[1], गेह, नित आकिंचन वृष भजो ॥१॥**

यह जीव अतुल-सुख-वीर्यवान, जगदर्शक, निर्मल ज्ञानवान ।
होकर भी पुद्गल योग पाय, खो देता सब गुण, कर कषाय ॥ २ ॥
ज्यों सिंह स्यालका संग पाय, निज गौरवको देता भुलाय ।
त्यों निज परिणतिको भूल जीव, परमें रमता-फिरता सदीव ॥ ३ ॥
नित धन संचयमें रहे लग्न, या बनितासंगमें रहे मग्न ।
पितु, मात, मित्र, सुत, घर, दुकान, दुख पाता इनको आत्म मान ॥ ४ ॥
ज्यों शुष्क अस्थि[2] कुक्कुर[3] चबाय, निज रक्त पानमें मुदित काय ।
त्यों बहि-आभ्यंतर संग[4] भोग, मन मोद करें हैं मूर्ख लोग ॥ ५ ॥
घर, खेत, धान्य, धन, दास, यान, पशु, शयन, कुप्य[5], दश, भाण्ड हान ।
क्रोधादिक चतु, नव नो कषाय, मिथ्यात्व सहित चतुदश नशाय ॥ ६ ॥
मुनि-पद धर, निजकर आत्म ध्यान, ज्ञानी करते सुख-सुधा पान ।
हितकर मानें वैराग्य ज्ञान, जग वैभव गिनते तृण समान ॥ ७ ॥
शिवकोटि नृपति पाकर स्वज्ञान, शिव-मंदिर कोट किये प्रदान ।
आकिंचन वृष पाला अनूप, हो नग्न दिगम्बर सुख-स्वरूप ॥ ८ ॥
चक्रीपद माना दुःखरूप, तज, हुए केवली भरत भूप ।
बालकपनमें हो गनकुमार[7], पहुंचे परिग्रह तज शिवमझार ॥ ९ ॥

**द्विविध संग परिहार, निज गुण नित विकसित करो ।**
**भोग चुके बहु बार, जगके सब ही भोग तुम ॥ १० ॥**

---

१ स्त्री । २ गीदड़ । ३ हड्डी । ४ कुत्ता । ५ परिग्रह । ६ वस्त्रादि । ७ गनसुकुमाल स्वामी ।

## १०. उत्तम-ब्रह्मचर्य।

अतुल बली यह मार[1], व्यथित करे जगको सदा।
इसका कर संहार, ब्रह्मचर्य पालन करो ॥ १ ॥
भव-वनमें हरि[2] सम सुभट मार, निर्भय जगका करता शिकार।
हरि, हर, ब्रह्मा, चक्री नरेश, धरणेन्द्र, इन्द्र, बलधर, खगेश ॥ २ ॥
सबका मर्दितकर मान मार, बहु व्यथित करे है बार-बार।
जिसने कँपाया है पहार, वह रावण इससे गया हार ॥ ३ ॥
काणा, कृश, गंजा, गलित-पुच्छ, मदमाता स्मरवश श्वान तुच्छ।
स्मरवश गुरु लघु हों, क्षमी क्रुद्ध, भय, खाय शूर हों मूढ़ बुद्ध ॥ ४ ॥
अंगार सरीखी नारि जान, घृत कुंभ सदृश नर तन पिछान।
ज्यों अनल संगसे घृत विनष्ट, त्यों नारि संग हो मनुज नष्ट ॥ ५ ॥
हों मूर्च्छा, क्षय, भ्रम, ग्लानि, स्वेद, तो भी कामी नहिं गिने खेद।
ज्यों खान खुजाते पड़े चैन, त्यों कामी माने अमन-चैन ॥ ६ ॥
नित मार सहैहै पशु समान, फंस नारी चंगुलमें नहान।
फिर पाप-पोटका दीर्घ भार, ले गिरते जन दुर्गति मझार ॥ ७ ॥
मुनि ब्रह्मचर्य-तलवार धार, इस काम सुभटको सकें मार।
जग जयी कामसे ठान जंग, करे ब्रह्मचर्य ही मान भंग ॥ ८ ॥
पुरुषार्थ भूप वृष[3] मुकुट मान, यह ब्रह्मचर्य कोहेनूर[4] जान।
यह काम सर्पको गरूड़ रूप, जग तिरनेको नौका स्वरूप ॥ ९ ॥
निर्बलको औषधि दिव्य रूप, शिव-मंदिरकी सीढ़ी स्वरूप।
मन-हस्तीको केहरि समान, विषयाशा-विषको मंत्र मान ॥ १० ॥
भ्रम-मोह-निशाको भानु जान, दुखनाशक सतसंगति समान।
भव-कूप पड़ेको रज्जु रूप, मिथ्यामतिको जिन-वच-स्वरूप ॥ ११ ॥
लख आत्म-रमणमें सुख अशेष, अतिचार तजो पांचों हमेश।
इस बिन नर-भव अति दुखद मान, पालो इसको नित सुखद जान ॥ १२ ॥

पाया नर-भव रत्न, "अमर" पुण्यके योगसे।
कर अब ऐसा यत्न, जिससे भव बाधा मिटे ॥ १३ ॥

स्वर्गीय ब्र० ज्ञानानन्दजी।

---

१ काम। २ सिंह। ३ धर्म। ४ इतिहास। ५ सिद्ध हीरा।

# दशलक्षण धर्म।

उत्तम खम मद्दउ अज्जवं सच्चउ पुण सउच्च संजम सुतओ।
चाउ वि आकिंचण भवभव बंचणवभं चरू धम्म जु अखओ।

धर्मका अर्थ स्वभाव है। जो जिस वस्तुका स्वभाव है वही उसका धर्म है। जैसे अग्निका स्वभाव गर्मी, जलका स्वभाव ठंडक है। इसी प्रकार जो आत्माको कर्म मलसे रहित करके उसका वास्तविक स्वभाव ( अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतवीर्य, अनंतसुख ) प्राप्त करावे, वही आत्माका धर्म है।

श्री आचार्य कहते हैं कि इस अक्षय धर्मके दश भेद हैं जिनके पालन करनेसे कर्मोंका नाश व सच्चे सुखकी प्राप्ति होती है।

१ **उत्तम क्षमा**–दुष्टोंके दुर्वचन कहने, तिरस्कार करने, हंसी उड़ाने, मारने, दुःखी करने आदि पर भी अपने परिणामोंमें मलिनताका न लाना। और कर्मोंका फल जानकर समताभावपूर्वक सहना।

२ **उत्तम मार्दव**–सबके साथ नम्रतासे वर्तना और अपनी १ जाति, २ कुल, ३ सुंदरता, ४ धन, ५ विद्या, ६ ज्ञान, ७ लाभ व ८ शूरवीरतापर किसी प्रकारका अभिमान न करना।

३ **उत्तम आर्जव**–हृदयमें किसी प्रकारका कपट न रखना, मन–वचन–कायकी कुटिलताको दूर करना।

४ **उत्तम शौच**–लोभका न होना, मन, वचन, कायकी शुद्धिके लिये संतोषका ग्रहण करना (व्यवहारमें स्नान आदि करनेको भी शौच कहा है)

५ **उत्तम सत्य**–सच बोलना, झूठ न बोलना, कठोर वचन न कहना, दूसरोंके दुःख देनेवाली बात न कहना, चुगली न करना, व्यर्थ बकवाद न करना, किसीकी हंसी न करना, आदि।

६ **उत्तम संयम**–अपनी इंद्रियोंको वशमें करना व विषयोंकी ओर प्रवृत्ति होनेसे रोकना, चलने–फिरने, उठने–बैठने, धरने–उठाने आदिमें किसी प्रकारका जीव घात न हो, ऐसे परिणाम रखना।

७ **उत्तम तप**–तप २ प्रकारका है।

(१) **बाह्यतप**–(१) लौकिकहानि–लाभकी इच्छा न करके संयमकी वृद्धिके लिये उपवास करना (२) उक्त प्रयोजनकी सिद्धि व ध्यानकी एकाग्रताके लिये भूखसे कम खाना (३) मुनिका भोजनके लिये जानेको ग्राम, घर आदिकका नियम करना, (४) इंद्रियोंको दमन करनेके लिये षटरसोंको या उनमेंसे किसी किसीको छोड़ते रहना (५) जहां ध्यान स्वाध्यायमें विघ्नके कारण न हों, ऐसे एकान्त स्थानमें सोना बैठना, (६) शरीरसे ममता दूर करनेके लिये कायोत्सर्ग करना, अर्थात् गर्मी सर्दीकी परीषह सहना, नदी किनारे पहाड़ आदि पर तप करना।

(२) **अंतरङ्ग तप**–(१) लगे हुए दोषोंको दण्ड लेकर निर्मल करना, (२) सम्यग्चारित्रकी तथा इनके धारकोंकी विनय करना, (३) मुनि-आर्जिका, श्रावक-श्राविका, रोगी व वृद्ध मुनिकी सेवा व सहायता करना (४) शास्त्रोंका यथारीति अध्ययन करना, (५) शरीरसे ममत्व

छोड़ना, (६) आत्म चिंतवन धर्मध्यान करना।

८ **उत्तम त्याग**—(१) अभय दान, (२) विद्या दान, (३) औषधिदान, (४) आहारदान, इन चार प्रकारके दानोंका देना, तथा सर्व प्रकारकी उपाधि व शरीर संबंधी दोषोंको छोड़ना।

दान देनेसे अवगुणोंका समूह सहज ही नाश होता है। चारों ओर निर्मल कीर्ति फैलती है, शत्रु भी पैरोंपर पड़कर नमस्कार करता है और भोगभूमिके सुख मिलते हैं, परन्तु दान सदा सुपात्रको करना चाहिये।

**श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, काशीमें दान करनेसे चारों प्रकारके दानका लाभ होता है,** क्योंकि जो छात्रगण इस विद्यालयमें पढ़ते हैं उनको आहारदान व विद्यादान तो नित प्रति ही होता है। जब छात्रगण बीमार पड़ते हैं, तो उनकी दवा भी की जाती है, अतएव दान की हुई रकमका एक भाग औषधि दानमें भी लगता है। इस विद्यालय द्वारा योग्यता प्राप्त किये विद्वान तथा धर्माध्यापक व छात्रगण यथाशक्ति अभय दानका भी प्रयत्न करते हैं। इस विद्यालयमें ९० विदेशी छात्र विद्याध्ययन करते हैं जिनके भोजन, वस्त्र, पढ़ाई आदिका १०००) मासिक खर्च है जो जैनसमाजके उदार दातारोंकी नित प्रति दातृत्व पर ही निर्भर है। इस विद्यालयको स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। अबतक १०० विद्वान इस विद्यालय द्वारा योग्यता प्राप्त करके प्रत्येक अंतमें अधिष्ठाता, धर्माध्यापक, उपदेशक—प्रचारक, संपादक, सुपरिन्टेन्डेन्ट आदिका कार्य योग्यतापूर्वक कररहे हैं।

अतएव इस परमपवित्र पर्यूषण पर्वमें प्रत्येक स्थानके भाइयोंको इस विद्यालयमें भी दान करना चाहिये। सालमें ३६५ दिन होते हैं। ३५) रोजानाका खर्च है। इस प्रकार ३६५ दिनोंके खर्चके लिये हर शहर व कसबाके भाइयोंको यथाशक्ति अवश्य दान करना चाहिये। श्री धर्मसंग्रह श्रावकाचारजीमें कहा है:—

**यत्सूनायोगतः पापं संचिनोति गृही धनम्।**
**स तत्प्रक्षालयत्येव पात्रादानाम्बुपूरतः॥**

अर्थात्—गृहस्थ लोग पंच सूना (पीसना, खांड़ना, चूल्हा सुलगाना, पानी भरना, झाड़ना) के संबंधसे जिस पाप समूहका संग्रह करते हैं, उसे पात्र दान रूप जल प्रवाहसे नियमसे धो डालते हैं।

नोट—विशेष विवरणके लिये श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशीकी वार्षिक रिपोर्ट मंगाइये।

(९) **उत्तम आकिंचन्य**—सर्व प्रकारकी सांसारिक सामग्रियों (२४ प्रकारकी परिग्रह) से ममता घटाना व उनका त्याग करना।

(१०) **उत्तम ब्रह्मचर्य**—विषय सेवन मात्रका अभाव और विषयोंसे अनुराग छोड़कर ब्रह्म (स्वआत्मा) में तल्लीन होना, ज्ञानकी वृद्धिके लिये गुरुकुलमें रहना व उनकी आज्ञा पालन करना, और विषय भोगादिक पुष्ट करनेवाले सर्व प्रकारके सुस्वाद भोजन, आभूषण, शृंगारादिक छोड़ना।

इस दशलक्षण धर्मके सेवन करनेसे अजर अमर अविनाशी मोक्ष सुखकी प्राप्ति होती है।

इस लिये हो भव्यजन! इसका नित्य पालन करो। ऐसा श्री आचार्यका आशीर्वाद है।

**सुमतिलाल जैन।**

# मिथ्यात्वका लक्षण भेद और उनका स्वरूप।

( लेखक-पं० चांदमल काला विशारद, पचार )

मिथ्यात्वका प्रबल साम्राज्य इस पंचम कालमें प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें खूबीसे अपना प्रभाव जमा रखा है। सम्यक्त्व इस मिथ्यात्वरूपी उग्र शत्रुसे डरकर कोसों दूर भाग गया है। पूर्वाचार्योंने मिथ्यात्वका स्वरूप इस तरहसे निरूपण किया है कि जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष इन सप्त पदार्थोंका यथार्थ रूपसे निश्चय न होना। और यह मिथ्यात्व, अज्ञान, एकांत, विनय, संशय, विपरीत, गृहीत और निसर्ग आदि अनेक प्रकारसे विभक्त हैं। और यह संसाररूपी सागरमें परिभ्रमण करानेवाला है त्रिमूढतारूप मिथ्यात्व महापापको उत्पन्न करनेवाला और जीवोंके वधको धर्म कहता है। देव मूढ़ता, गुरुमूढ़ता, लोकमूढ़ता, इस तरह तीन भेदरूप हैं। बालाजी, भैरवजी, गणेशजी आदि रागीद्वेषी देवोंकी मनोकामनार्थ सेवाटहल आदर-सत्कारादि करनेमें अपना अहोभाग्य समझना **देवमूढ़ता है।**

परिग्रह आरम्भ और संसार सागरमें परिभ्रमण करानेवाले पाखंडी साधु तपस्वियोंका आदर सत्कार, सेवा टहल व भक्ति पूजनादि करना **गुरु मूढ़ता है।**

धर्म समझकर गंगा यमुनादि नदियोंमें तथा समुद्रमें स्नान करना, काशी करोत खाना, बालु और पत्थर वगैरहका ढ़ेर करना, पर्वतसे गिरना, अग्निमें जलना आदि अनुचित कार्योंको करना **लोकमूढ़ता है।**

उपर्युक्त बतलाये हुए मिथ्यात्वके भेदोंमें एकांत मिथ्यात्वी पदार्थको नित्य अनित्य ज्ञानस्वरूप अज्ञान स्वरूप न मानकर सर्वथा एक ही तरहसे मानते हैं। विनय मिथ्यात्वके वशीभूत जीव एक धर्ममें स्थिर न रहकर सर्वदा इधर उधर भ्रमण करता हुआ पागलवत् मालुम पड़ता है। संपूर्ण पदार्थोंके ज्ञाता रागद्वेषसे विनिर्मुक्त सर्वज्ञ वीतराग हितोपदेशी इन तीनों गुणों सहित जिनेन्द्र भगवानने जीव अजीवादि पदार्थोंको तत्व बतलाये हैं या अन्य तरहसे निरूपण किये हैं और तत्व सात होते हैं या न्यूनाधिक होते हैं आदि चिन्तवन करनेवाला **संशय मिथ्यादृष्टि है।** पदार्थोंको समझनेपर और निश्चय होजानेपर भी अन्य तरहसे मानना **विपरीत मिथ्यात्व है।**

जिस तरह कुत्ता रोटीको छोड़कर मांसको ग्रहण करता है उसी तरह गृहीत मिथ्यात्वको धारण करनेवाला मनुज कुहेतु कुदृष्टान्तोंसे परिपूर्ण उपदेशोंके वशीभूत कुतत्वोंका तो श्रद्धान करता है पर वास्तविक तत्वोंका श्रद्धान नहीं करता है। काले वस्त्रसे आच्छादित किया हुआ मनुष्य अंधकारमें रंगबिरंगे चित्रोंको नहीं देख सकता उसी तरह निसर्ग मिथ्यात्वी अज्ञानतासे सदुपदेशों द्वारा अनेक बार समझाने पर भी वास्तविक तत्वोंका श्रद्धान नहीं करता है।

बंधुवर, जिस तरह मिट्टीसे भरी हुई तूंबरीमें जल कदापि नहीं रह सकता है उसी तरह परिपाकमें कटुक फल देनेवाले मिथ्यात्वरूपी रजोमलसे जिन पुरुषोंकी आत्माएँ मलिन होगई हैं उनकी आत्मामें दया, शांति, ध्यान, तप,

व्रतादि समस्त सद्गुण प्रकट नहीं होते हैं। जिस तरह उन्मत्त मनुष्य माको बहिन मार्याको माता, भ्राताको पिता, पिताको भाई, माको माता, मार्याको भार्या कह देता है किंतु वास्तवमें ये सब क्या हैं इस बातका निश्चय नहीं कर सकता उसी तरह मिथ्यात्वके प्रबल प्रभावसे हेयको उपादेय, सत्को असत् समझता है परन्तु वास्तविक बातको नहीं जानता है।

उर्द्धलोक, मध्यलोक, पाताल लोक और भूत भविष्यत, वर्तमानकालमें मानसिक वाचनिक शारिरिक असह्य दुःख होते हैं वे संपूर्ण संसारसागरमें परिभ्रमण करते हुए जीवोंको इसी मिथ्यात्वके महात्म्यसे होते हैं। हमारे असीम उपकारक पूज्य पूर्वाचार्योंने इस तरह निरूपण किया है कि—

**वरं विषं भुक्तम् सुक्षयक्षमं।**
**वरं बनं श्वापदवह्निसेवितं॥**
**वरं कृतं वह्नि शिखाप्रवेशनं।**
**नरस्य मिथ्यात्वयुतं न जीवितं॥**

अर्थात् विष खा लेना अच्छा, श्वापद (कुत्ता) सिंह भालु आदि हिंसक प्राणियोंसे भरे हुए निर्जन बनमें रहना अच्छा है, अग्निमें गिरकर आत्म विसर्जन करदेना भी श्रेष्ठ है किन्तु इस संसारमें उनकी अपेक्षा समिथ्यात्व जिंदा रहना श्रेष्ठ नहीं है। इस संसारमें जीवोंका जितना अहित मिथ्यात्वरूपी परमशत्रु करता है उतना सिंह, सर्प, मदोन्मत्त हस्ती, रुष्ट राजा आदि कोई भी नहीं कर सकते क्योंकि सिंहादि हिंसक पशुओंके काटखानेसे तो एक ही भवमें दुःखोंका सामना करता है किन्तु मिथ्यात्वके प्रबल प्रभावसे जन्म जन्ममें दुःख उठाने पड़ते हैं। विशेष तो क्या यह जीव दश प्रकारके क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच सत्यादि पवित्र धर्मोका भी आचरण करे, निर्दोष भिक्षावृत्तिका भी आचरण करे, ब्रह्मचर्य व्रतका भी पालन करे, और आहारदान, औषधदान, शास्त्रदान और अभयदान इन चार प्रकारके दानोंको भी देता रहै, समक्ति अरहंत देवकी उपासना करे, अनेक प्रकारके उपवास करे आदि धार्मिक कार्य कितने ही क्यों न करो लेकिन जबतक हमारे हृदयपटलसे मिथ्यात्व दूर नहीं होगा तब तक निराबाध सिद्धपदको प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए प्रिय सज्जनो! हम लोगोंका परम कर्तव्य है कि हमारा अहित करनेवाले मिथ्यात्वको हृदयपटलसे दूर हटाकर जो हमारा सदैव हित चाहता है उस सम्यक्त्वको अपने हृदयमें स्थान देवें क्योंकि प्रातः स्मरणीय हमारे असीम उपकारक समन्तभद्राचार्य स्वामीने अपने निर्माण किये हुए रत्नकरण्ड श्रावकाचारमें यह कहा है कि:—

**न सम्यक्त्वसमं किंचित्त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि। श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यतनूभृताम्॥**

अर्थात् तीन काल और तीन जगतमें सम्यक्त्वके सदृश जीवोंका कोई कल्याण करनेवाला नहीं है और मिथ्यात्वके समान अकल्याण करनेवाला नहीं है।

**पवित्र काश्मीरी केशर—**
का भाव २॥) फी तोला है।
मैनेजर, दिगंबर जैन पुस्तकालय—सूरत।

# फालसा।

फालसा, परुषा, पेरुसा, फरुसा, फेरुसा, फरुषा, फेरुषा। सं० परूषकः, गिरिपीलुः, नीलचर्म, नीलमण्डल इत्यादि। बं०—परुष, फसला, फल्सा शकरी। म०—पर्पका। क०—वेट्टहा, दागली, दोगळी, दोगलि। ते०—पुटिकी, फुटिकी। ता०—तडावी। ते०—चिट्टेदु। गु०—श्रामण। म०—फालस्या, प०—फालसा, प्रा०—फलुहे; फरुषा, शुकरी। सिन्ध—फारहो, फाल्सा, कोल० सिधिन दामिन। सन्ता—जंगोलट। पुश्ती०—पस्तओनी, शिकारिम, एवाह। फा०—पालसा, फालसह, पालसह। अ०—फालसह। ले०—Greeviaasiatica ऍं०—Asiatic Greevia।

यह सीलोन, अवध तथा भारतवर्षके कितने ही प्रान्तोंकी वाटिकाओंमें रोपण किया जाता है, किन्तु पूर्व बंगालमें कम दीख पड़ता है।

इसका वृक्ष मध्यम आकारका होता है। छाल भूरे रंगकी होती है। पत्ते चार पांच इंच लम्बे, २—२॥ इंच चौड़े, गोलाकार, प्रायः तीन भागवाले, अनीदार और नुकीले होते हैं। वसन्त ऋतुमें पुराने पत्ते गिरकर नवीन पत्ते निकल आते हैं। प्रायः इसी समय यह वृक्ष फूलता फलता है। ४—५ फूलोंके गुच्छे लगते हैं। फूल पीले रंगके होते हैं। फिर फल आकर वे वैशाख, जेठ तक पकजाते हैं। फल मटरके समान, कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर काले पड़जाते हैं।

**आ० म० गुणके दोष**—शीतवीर्य, मूत्र दोषको शोधन करनेवाला तथा वात, पित्त, प्रमेह, योनिदाह और लिङ्गकी दाहको नष्ट करनेवाला है।

**फालसेके कच्चे फल**—खट्टे, कषैले, स्वादिष्ट, हल्के, गरम, रूखे, पित्तकारी, चरपरे तथा कफ और वातका नाश करनेवाले हैं।

**फालसेके पके फल**—मधुर, शीतल, स्वादिष्ट, रुचिकर, पाकके समय मधुर, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, तृप्तिजनक तथा वात, रक्त पित्त, दाह, तृषा, शोफ, पित्त, रुधिर विकार, ज्वर और क्षयरोगको हरने वाले हैं।

**यू० म० गुण दोष**—तीसरे दर्जेमें ठंडा और पहलेमें रूक्ष हृदय, आमाशय और गरम यकृतको बलप्रदान करनेवाला, पित्तज अतिसार, वमन; हिचकी और तृषाको निवारण करनेवाला एवं ज्वरकी गरमी, वक्षःस्थलकी दाह, आमाशयकी दाह, मूत्रकी दाह और प्रमेहको दूर करनेवाला है। इसका स्वरस आमाशयके लिए बलकारी हृदयकी व्याकुलता और धड़कनको हरनेवाला और गरमीकी तृषाको शान्त करनेवाला है। तथा शीत प्रकृतिवाले मनुष्योंके लिए हानिकारक, अनीसून और गुलकन्द है।

**प्रयोग**—(१)—इसकी जड़, छाल, पत्ते और फल औषधिके काममें आते हैं। सन्थालजोग इसकी जड़की छालको सन्धिवातपर व्यवहार करते हैं। इसकी छालका काढा स्निग्धताजनक होता है। पत्ते फोड़े, फुन्सी, छाले आदिपर लगाये जाते हैं। फल—संकोचक शीतल और अग्निप्रदीपक होते हैं। इसका शर्बत रुचिकर और रक्तशोधक होता है। २प्रमेह और मूत्रकी दाहपर

इसकी जड़की छालको टुकड़े २ करके रात्रिमें जलमें भिजो देवे, फिर प्रातःकाल उसको मलकर और वस्त्रमें छानकर पान करे तो विशेष लाभ होता है। (३) इसके शर्बतको पीनेसे दाह दूर होती है। (४) उदरशूलमें—अजवायनके चूर्णको इसके गरम रसके साथ सेवन करनेसे विशेष उपकार होता है। (५) फोड़ेको पकानेके लिए—इसके पत्तोंको पीसकर बांधना चाहिए। (६) औषधियोंकी चरपराहट पर इसकी छालका हिम पिलाते हैं। (७) गठियामें इसकी जड़की छालके कढ़ेको सेवन करनेसे आरोग्य लाभ होता है। (८) मूत्रकृछ पर इसकी १४ माशे जड़को पावभर पानीमें रात्रिमें भिजो देवे, और प्रातःकाल खूब मलकर वस्त्रमें छानलेवे। इस प्रकारसे उसको एक या दो सप्ताह तक सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र दूर होता है। (९) इसकी जड़को पीसकर स्त्रीकी नाभि, वस्ति और योनिपर लेप करनेसे मूढ़गर्भ निकल आता है। (१०) बादीकी वमन, रुधिरविकार और उदरकी दुर्बलता पर काले रंगके मीठे फालसोंके रसमें गुलाबजल और दुगुनी चीनी मिलाकर शर्बत तैयार करके उसको पान करनेसे शीघ्र लाभ होता है। (११) चार तोले छालको शीतल जलमें पीसकर और मिश्री मिलाकर शर्बत बना लेवे। उस शर्बतको सेवन करनेसे श्वेतप्रदर नष्ट होता है। (१२) सुनाक पर—पके फलोंको १॥ छटांक जलमें भिजोकर १ घंटेके बाद उनको अच्छी तरहसे मलकर वस्त्रमें छान लेवे। उसको मिश्री मिलाकर पीनेसे पेशाबकी, कमी चिनग, जलन आदि उपद्रव नष्ट होते हैं। फलके अभावमें इसकी छाल लेनी चाहिये।

"वैद्य"

# बारह भावना तथा बारह मासा।

( श्री स्वर्गीय त्यागी शांतिदासजीकृत )

॥ दोहा ॥

**छूटै मिथ्या वासना, गावहु बारह मास।**
**भावौ बारह भावना, शिवसुख पावन आस॥**

पिया जाते वृत रत्थ सजके विपन ॥ सरस तीय समझावे करके जतन ॥ टेक ॥

स्त्री वाचः—"तजै चील अंडा ये जेठकी तपन, सकैं सह न पर्वत भी लागे लगन।
लगै ब्यार झरसी, जरावै वदन, चलो पुष्प सेज्या पै कीजै शयन॥

पुरुष वाचः—रहे थिर न गिरिराज लागे लगन, रहै थिर न काया, न जोवन, न धन।
अथिर पुष्प सेज्या अथिर जग सदन, अथिर प्रीति भी चील त्यामे लखन ॥१॥ पि०

स्त्री०—लगा षाढ़ बरसातका आगमन, किलोलें करें पंक्षीगन मिल चमन।
विदेशी सजन भी सिधारें सदन, रहें नारि बरसाथ अट्टालिकन ॥

पुरुष०—करें वास क्या ऊंच अट्टालिकन, छः खंडी बचे नांहि चौरासी खन।
लगे काल न्यारी गिरे तरु चमन। धरम, देव, गुरु शास्त्र विनको शरण ॥२॥ पि०

स्त्री०—ए सावनकी यामिन, सुहानी पवन, हिलोरें घटा मेघ लागे झरन।
झुलाऊं हिंडोला तुम्हें अब सजन, मरूं राग तो संग यही आवे मन ॥

पुरुष०—हिंडोला जगत यह अनादि निधन, लगी दोय डोरी जे आवागमन।
चले झुकवा चहुँगति लगे विध पवन, मरूं राग 'सोहं, स्वयं जा विपन ॥३॥ पि०

स्त्री०—न भादोंमें पक्षी भी छांड़े सदन, रहें नारी नर दोनों हिलमिल मगन।
अंधेरी झुके घोर कर बरसें घन, हुए एक जल थल करो किम गमन ॥

पुरुष—अकेला करे चारों गतिमें गमन, सकें रोक अंधेरी न जल थल न घन।
अकेला सहै दुःख जन्मन मरन, चलें संग तन धन न पुरजन सुजन ॥ ४ ॥ पि०

स्त्री०—चलै शीत पावस ग्रीषम पवन, जनावे सुखासौज तीनों रितुन।
जड़ी नारी बहु फूलें अद्भुत फवन, मिलें क्षीर जल सम तिया मीत मन ॥

पुरुष०—मिले क्षीर जल तेल तिल रंग पतन, त्यों ही तनमें चेतन सुगंधी सुमन।
सवे द्रव्य न्यारी निराले गुनन, धरें परजे न्यारी लखो जिन श्रुतन ॥ ५ ॥ पि० ॥

स्त्री०—खिले चंद्र कातिक है निर्मल गगन, सुगंधें मलें सब सजावें सदन।
मनावें दिवाली भरें मोद मन, करें द्यूत क्रीड़ा रमावो रमन ॥

पुरुष०—नसावे सुगुन धन फसावे दुखन, मलिन द्यूत क्रीणा करें ना सुजन।
सुगंधें करें सब अपावन यह तन, अशुचि जान यासे न राचें रमन ॥ ६ ॥ पि० ॥

स्त्री०—लगा शीत अगहन परन जो गहन, खुले प्रेमके द्वार चारों लतन।
घनी प्रीति धारें सबै ज्यों बसन, लगावें धनी त्यों घनासे लगन ॥

पुरुष०—खुले दर सदाचार ऊपर त्रिपन, मिथ्यात्योग अव्रत कषायाश्रवन।
करें कर्म इन द्वारसे आक्रमन, टूटे डोरी ममता छुटे जग भ्रमन ॥ ७ ॥ पि० ॥

स्त्री०—परै पूष पाला लगै तन गरन, रहै संग बाला, बसै सेज मन।
महारैन हेमवंतमें भोगी जन, रहैं डारि परदा सबै निन दरन॥

पुरुष०—समित गुप्ति वृषाचार परिसा भवन, लगा डाट संवर जे आश्रव दरन।
रहें रैन हेमंतमें इस जतन, मिटैं शीत भोगनकी सब कड करन॥ ८ ॥ पि० ॥

स्त्री०—परै माघ सरदी पै दर्दी सजन, रखें दिल न गरदी वेहरदी दुःखन।
रंगे रंग जर्दी जगावैं मदन, फिरै सूर पीछे बसंतामगन॥

पुरुष०—करें ध्यान वृद्धिः बसंती पवन, धरैं भाव शुद्धिः न व्यापै मदन।
जगैं सर्व ऋद्धि हरैं सब दुःखन, जे अभिपाक निर्जर है सिद्धी करन॥ ९ ॥ पि० ॥

स्त्री०—मिलैं फागमें शत्रू अरु मीतगन, यही लोक रीति उलंघै कवन।
तजो हट विषन, धारो अनुरागमन, चलो फाग खेलन सजन रंगभवन॥

पुरुष०—उतंग राजु चौदा विडोवत बलन, स्वयं सिद्ध कर्ता न हर्ता कवन।
भरीं डेढ़ मूरज दिख षट द्रव्यन, फिरै जीव दुरिहालौं चौदा भुवन॥ १० ॥ पि० ॥

स्त्री०—तजौ चेत चिंता मेरे मनहरन, मिल भोग भागन विषय सुखकरन।
तजै गोदका क्यों उदर लालसन, कहां सुख नरभव सुरग त्रिदशन॥

पुरुष०—यह सच है मनुष भव मिलन अति कठिन, सुकुल थल कठिन बोधदुर्लभ मिलन।
करै आप तन मन वचन अनुभवन, यही ऊँचपन देवसे नर सुखन॥११॥ पि० ॥

स्त्री०—त्रषारोग बाढ़ै लगै ताप तन, विकल हो मम याद आवें वचन।
छः दर्शनमें भावै सुकीजे ग्रहण, करो उग्र व्रत दान ब्रह्मचरण॥

पुरुष०—जे वेशास्त्र दर्शन छः भावे न मन, विषय पोषक हिंसक परिग्रह धरण।
दरब तत्व दर्शाय शिवमग करन, अहिंसामई एक जिन धर्म गन॥ १२ ॥ पि० ॥

स्त्री०—करौ लौंदमें न्याय मेरा सजन, चले छोड़ किस पर हो करुणा धरण।
पराधीन परजाय हम दुःख भरन। करैं आस किसकी बतावो जतन॥

पुरुष०—शुभाशुभ सबै व्यापैं अपने करन, मिलैं सुख इनको करै जब दहन।
जरम आस कर पालो सद् आचरण, यो समझाय मन सुख चले फिर विपन॥१३॥

सोरठा—नारी करत विचार, परवस भव भव दुःख भरे।
निज बस कियो न काज, विकलप तजि व्रत आदरे॥

कामताप्रसाद जैन अलीगंज।

## गुजरात और बागड़ प्रांतमें एक वृहत् छात्राश्रम सहित संस्कृत विद्यालयकी आवश्यक्ता और उसके लिये समस्त गुजराती तथा बागड़वासी श्रीमानोंसे अपील।

( लेखकः—पं० दीपचंदजी वर्णी, दाहोद )

महानुभावो ! आप लोगोंने तीर्थयात्रा करते हुवे स्याद्वाद विद्यालय काशी, सिद्धान्त विद्यालय मोरेना, महाविद्यालय व्यावर ( मथुराका ) ऋषभ ब्रह्मचर्य्याश्रम जयपुर (हस्तिनापुरका), स० मु० त० पाठशाला सागर, दिगम्बर जैन शिक्षा-मंदिर जबलपुर, श्रावक वनिताविश्राम आरा, दि० जैन श्राविकाश्रम बम्बई, इंदौर, दिहली आदि प्रसिद्ध २ शिक्षा संस्थावोंको तो अवश्य ही देखा होगा, जहां आपके अन्य प्रान्तीय साधर्मी बालक बालिकाएं, माई बहिनें, बहु संख्यामें शिक्षालाभ ले रहे हैं, उनके मधुर कंठसे उच्चरित धर्मसूत्र कैसे कर्णप्रिय लगते हैं, अहहा ! जब वे अल्प वयस्क विद्यार्थीगण भरी हुई सभामें सिंह गर्जनाके साथ व्याख्यान देते हैं, तब हृदयके चिरकालसे बंद कपाट खुलजाते हैं। उनको देखकर, उनके आलापको सुनकर प्रेमाश्रु निकल पड़ते हैं, हृदय गदगद हो उठता है, और एकवार इस अधेड़ अवस्थ.में पढ़नेका भाव भीतरसे उमड़ उठता है "विद्या परं देवत्" ऐसा साक्षात होजाता है। परंतु हाय ! जब हम अपने बालक बालिकावोंकी ओर दृष्टिपात करते हैं, सारा आनन्द मोहवश निरानन्दरूप परिणत होजाता है, नेत्रोंके सन्मुख अंधकार छा जाता है, और "विद्या विहीनः पशुः" यह कहावत चरितार्थ होजाती है। तत्काल ही विचार तरंगें उठने लगती हैं कि क्यों हमारे ये बालक ऐसे अज्ञानी रह गये। धन्य है उन बालकों! तनके गुरुवों और संरक्षकोंको जिन्होंने ऐसी उत्तम विद्या पढ़ी और पढ़ाई, तथा धन्य है इन प्रांतोंके नेतावों व श्रीमानोंको जिन्होंने इन मुमुक्षु बालकोंकी जिज्ञासा पूरी करनेके लिये ऐसी २ शिक्षा संस्थाएं व आश्रम खोलकर कितना बड़ा उपकार समस्त भारतवर्ष मात्रकी जैन समाजभरका किया है, कि जो मृतप्रायः यह जैन समाज आज पुनः चैतन्यभावको प्राप्त होगई है। अहहा ! आज इन्हीं संस्थावोंके द्वारा पढ़ पढ़कर निकले हुवे छात्र धुरंधर विद्वानोंके रूपमें समस्त भारत व्यापी होकर जैन धर्मका उद्योत कररहे हैं, यह सब उपकार महासभा और प्रांतिक सभावोंका ही है ? निःसन्देह सूर्यका उदय तो समस्त भूमण्डल भरके लिये होता है, परंतु नेत्रहीन पुरुष उससे लाभ न उठाये, तो सूर्यका क्या दोष ? यह उसीकी भाग्यहीनता है। वास्तवमें हम लोगोंने आजतक न तो मोह ( झूठे मोह ) वश अपने बालकोंको ही उक्त संस्थावोंमें विद्या अध्ययनार्थ कहीं भेजे, और न अपने यहां ही उनको पढ़ानेका कोई सुभीता किया. तब क्या बिना शान पर चढ़ाये ( बिना विद्या पढ़ाये ) ही हीरा ( ये होनहार बालक ) मुकुट मणिकी ( विद्वज्जन सम्मेलनोंकी ) शोभाको बढ़ासक्ते हैं ? नहीं २ कदापि नहीं। हाय ये बालक क्या कहेंगे " ॐ नमः सिद्धम्" "आप पढ़े ना हम" यथार्थमें इसमें हमारा ही

अपराध है। जब वे व्यापार सीखते हैं, पैसा कमाते हैं, खातावही, कोर्ट कचहरी करते हैं, वो इनको विद्या क्यों नहीं आती। परंतु आवे कहांसे ? हमने तो इनको पढ़ने ही नहीं दिया। क्या हम निर्धन हैं जो विद्यालय नहीं खोल सक्ते हैं ? नहीं। यदि हम निर्धन होते, तो ये बड़े २ केशरियाजी, भीलोड़ा, गिरनार, पावागढ़, तारंगा, सेत्रुंजा, डूंगरपुर, सागवाड़ा, कलिंजरा आदिके विशाल मंदिर कैसे बन जाते ? अब भी प्रतिवर्ष प्रतिष्ठाएं पूजाएं ( तेराद्वीप, समोसरण, नंदीश्वर, बारसौ चौतीस आदि ) विधान होते हैं जिनमें तथा ब्याहके व मौसरके जीमनोंमें, वर व कन्याके पितावों तिजोरियां भरनेमें, भेषी पाखंडी धर्मके नामके धुतारोंके पेट भरनेमें, कितना द्रव्य व्यय होता है ? फिर हमारे भाई बम्बई, इंदौर, शोलापुर, बीजापुर, पंढरपुर, आकलुज, बार्शी, फलटण, बारामती, परंडा, पूना आदि दक्षिणके अनेक स्थानोंमें व्यापारार्थ चले गये हैं, वे प्रायः सभी अपने उद्योग और पुण्यके फलोंका सुखसे उपभोग कर रहे हैं, और जो वहांसे आकर अपने देशके प्रेमवश यहां तारंगादिमें प्रतिष्ठाएं कराते हैं, ईडर, बड़ाली, केशरियाजीकी वंदनार्थ सदा आते हैं सो क्या विना ही द्रव्यके यह सब कार्य होजाता है ? नहीं२ द्रव्य तो है और भाव भी है। परन्तु **परिणमन** अभी इस ओर नहीं हुवा है बस केवल इतनी ही बात है। हम समझते हैं कि "गई सो गई अब राख रही को" इस कहावतके अनुसार हमारे भाई अवश्य ही विचार करेंगे और अपने इन प्रांतोंकी अज्ञानजन्य दीन हीन अवनत दशाके सुधारनेका प्रयत्न करेंगे। भाइयों ! जो प्रांत वाग्वर अर्थात् श्रेष्ठवचनवाला कहाता था वह आज बागड़ (जंगली) नामको प्राप्त हो गया, जहां पं० लक्ष्मीचन्द जैसे गोमट्टसारके ज्ञाता, पांडव पुराणके कर्ता आदि महान नर हो गये, आज वहां सूत्र बांचनेवाले नहीं रहे, हाय आज यहां बढ़ई, भाट, भोजक लोग, गादीपर बैठकर शास्त्र सुनानेवाले हमारे गुरु बन बैठे, ये चौमासा करते हैं, पछेड़ी भेंट आदि चढ़ जाते हैं। जहां देवसेन, हर्षकीर्ति, चतुर्मती जैसे आडंबर धारी भेषी लोग मुनि आर्यिका बन बैठे हैं, जहां अन्य प्रांतका साधारण अक्षराभ्यासी मनुष्य पंडितजी महाराज कहाता है, जहां अष्ट द्रव्यकी नित्य पूजा करानेके लिये भी किसी नामधारी पंडितको बुलाना पड़ता है इत्यादि दशा हो गई, प्रभु रक्षा करो ! मैंने इन प्रांतोंमें भ्रमण करके इसकी अवस्थाका पूर्ण परिचय किया है और इन प्रांतस्थ भाइयोंसे भी मुझे परिचय है, इनकी वर्तमान अवनत स्थिति लेखनीमें नहीं आसक्ती है। इस लिये ही अपने हृदयस्थ भावोंको कुछेक शब्दोंमें दिखाकर यह **अपील** करता हूं कि आप लोग इस पतित अवस्थासे शीघ्र उन्नतावस्थाको प्राप्त करनेके लिये उक्त दोनों प्रांतोंके हितार्थ किसी केन्द्र स्थानमें एक बृहत् **"शिक्षासदन"** छात्रावास सहित खोल देवें तो शीघ्र ही यह त्रुटि दूर हो जावे, और अन्य प्रांतोंके समान ये भी प्रकाशमें आजावें। इसके लिये मेरी सम्मतिमें **दाहोद** ( पंचमहाल ) स्थान बहुत योग्य है, कारण यहां पोष्ट है, तार है, रेल्वे स्टेशन है,

जलवायु सुखद है, भोजनादि व्यय भी कम पड़ता है, उक्त दोनों प्रांतोंका केन्द्र भी है, व्यापारी स्थान है इत्यादि सुभीते हैं। इसके सिवाय यहां १ जैन पाठशाला कई वर्षोंसे सुचारु-रीत्या चल भी रही है। धर्मशालाका मकान भी हालमें कार्य चलाने योग्य तैयार है। केवल एक या दो अध्यापकों और कुछ छात्रवृत्तियोंकी आवश्यकता है सो इसका प्रबन्ध होते ही कार्य प्रारम्भ हो जायगा, आशा है कि आप लोग इस अपीलपर ध्यान देकर और अपने बाल-कोंकी पुकारको सुनकर इस छोटीसी मांगको पूरी करेंगे। अर्थात् शीघ्र ही इस स्थानमें १ "सन्मति शिक्षा सदन" खोलकर अपनी उदा-रता प्रगट करेंगे। अथवा अपना कर्तव्य ही पालन करेंगे।

कर्तव्य अरु निज देशकी,
अवनत दशाको देखकर।
जीतव्य अरु निज द्रव्यको,
चपला समा चल लेखकर॥
खोलकर "शिक्षा सदन",
अब ज्ञान उन्नति कीजिये।
अथवा विचारे बालकोंको,
अपढ़ रहने दीजिये॥

## सोलहकारण धर्म।

अभी ही नवीन छपकर दूसरीवार तय्यार हुआ है। इसवार इसमें सोलहकारणव्रत कथा व सोलह भावनाओंके सोलह सवैये भी बढ़ा दिये गये हैं। व कुछ बढ़ाया घटाया भी गया है। की० ॥) मैनेजर, दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत।

## जीव-दया।

( एक अंग्रेजी पोइमका अनुवाद )

( १ )

शीघ्र शीघ्र चल करके हे प्यारे!
उस कीड़ेको मत कुचलो।
तुच्छ समझते हो तुम जिसको,
वो भी है इक जीव अहो॥

( २ )

जो मालिक सब जीव मात्रका,
जिसने तुम्हें बनाया है।
उस बेचारे कीड़े पर भी,
दयाभाव दरसाया है॥

( ३ )

सूरज, चांद, सितारे सबको,
किंतु किसीको खास नहीं।
जैसी तुमको फैलाई है,
वैसी उसको घास जमीं॥ [ज़मीन]

( ४ )

खुश होने दो, लैने दो तुम,
तनक जिंदगी खुशी उसे।
हाय: जान जो दे नहिं सकते,
क्यों फिर लेते 'प्रीय' उसे॥

पन्नालाल जैन 'प्रिय'-फुलैरा।

## गृहस्थधर्म-

दूसरीवार छप चुका है। बाइन्डिंग होकर तैयार होगया है। मू० १॥) सजिल्द १॥।) मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

# गरमीमें गरम चाय !

चायका नित्य सेवन स्वास्थ्यके लिए बड़ा हानिकारक है। विशेषकर भारत जैसे गरम देश-वासियोंके लिए तो चायकी कुछ भी आवश्यक्ता नहीं जान पड़ती। पर दुःखका विषय है कि आजकल इस देशमें इस हानिकारक पदार्थका प्रचार इतना बढ़ता जारहा है कि जिसको देख-कर बड़ा आश्चर्य होता है। बहुत लोग सवेरे उठते ही पहले चाय देवताकी आराधना करते हैं, पीछे और काम करते हैं। बम्बई, कलकत्ता आदि बड़े बड़े शहरोंमें तो प्रायः सभी श्रेणीके लोग दिनमें कई कई बार चायपान करते हैं। वर्षा, शरद, ग्रीष्म आदि सभी ऋतुओंमें चाय-की दूकानोंपर चायके आराधकोंकी निरन्तर भीड़ लगी रहती है। अत्यन्त गरमीमें जब कि लोग अनेक प्रकारके ठंडे अर्क, शर्बत, बर्फ, लेमनेट आदि शीतल पदार्थोंको बारम्बार सेवन करते हुए भी प्यासको शान्त नहीं करसकते तब चायपानके द्वारा किस प्रकार शान्तिलाभ करसकते हैं, यह समझमें नहीं आता। चायके व्यवसायी तरह तरहके वाग्जालों द्वारा लोगोंकी आंखोंमें धूल डालकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। "गरमीमें गरम चाय ठंडक पहुंचाती है।" इस प्रकारके मिथ्या और विरुद्ध वाक्योंसे पूर्ण चाय कम्पनियोंके विज्ञापन आज भारतके छोटे बड़े सभी नगरोंकी दीवारों पर चमकरहे हैं।

भोले भारतवासी प्रायः ऐसी विज्ञापनी बातोंके प्रलोभनमें आकर चायके चिरसहचर बनजाते और अपने स्वास्थ्य सुखको तिलाञ्जलि दे बैठते हैं। चाय वास्तवमें बड़ी ही हानिकारक चीज है। यह अत्यन्त उष्ण, तीक्ष्ण और विषाक्त है। इसको पान करते ही शरीर और मनमें एक प्रकारकी स्फूर्ति मालूम होती है। किन्तु पीछे वही स्फूर्ति पहलेसे भी अधिक शिथिलता उत्पन्न कर देती है। चायके अधिक अभ्याससे स्वाभा-विक दुर्बलता उत्पन्न होती है, परिपाक यन्त्र खराब होकर भूख बन्द होजाती है। निद्रा नष्ट होजाती है और शरीरमें विविध प्रकारके रोगों-की उत्पत्ति होती है।

न मालूम हम कब समझेंगे कि कौनसा पदार्थ हमारे लिये हितकर है और कौनसा अहितकर।

"वैद्य"

---


# नये २ ग्रंथ मगाइये।

**प्राचीन जैन इतिहास प्रथम भाग** ॥।)

**जैन बालबोधक चौथा भाग**—इसमें ६७ विषय हैं। पृ० ३७२ होनेपर भी मू० सिर्फ १=) है। पाठशाला व स्वाध्यायोपयोगी है।

**आत्मसिद्धि**—अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती ॥।)

**जिनेंद्रभजनभंडार** ( ७१ भजन ) ।=)

## नित्यपूजा सार्थ

इसमें नित्य पूजा हिंदी भाषामें अनुवाद सहित अभी ही नवीन प्रकट हुई है। पृ. १२८ व मू० आठ आने।

## जैन नित्य पाठ संग्रह।

नामक १६ जैन स्तोत्रोंका गुटका जो अभी नहीं मिलता था फिर मिल रहा है। मू० आठ आने

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

# प्रातः कर्म विचार.

( લેખક–મોહનલાલ મથુરાદાસ, કાર્ણીસા ).

વહાલા ધર્મ બંધુઓ ! ! !

પૂર્વના સમયમાં આપણે જૈન એટલે વિજેતા જેણે સર્વોપરી પદ પ્રાપ્ત કર્યું છે, તે જૈન ભગવાનના ઉપદેશને માનનારા જૈનો કહેવાતા હાલ પણ કહેવાઇએ છીએ ખરા, બાકી નથી આપણામાં પૂર્વના સમયની ક્રિયા કે નથી આપણામાં તેવી ઉચ્ચતમ ધાર્મિક શ્રદ્ધા !

આપણા સમાજમાં દૃષ્ટિપાત કરતાં નથી જણાતી પ્રાતઃસંધ્યા કે, નથી જણાતી સ્નાન પૂજા. જણાય છે, ફક્ત રોટલા સ્નાન વિધિ એટલે કે ખાવાને સમયે સ્નાન કરવાની કુપ્રથા ?

ખરી રીતે જોતાં આપણા કેટલાક બંધુઓ તે ક્રિયા જાણતાજ નથી તો કરે ક્યાંથી કેમકે આપણા પૂર્વાચાર્યોએ જે ક્રિયાઓ બતાવી છે તે પ્રાકૃત અને સંસ્કૃત ભાષામાં છે, તેથી આપણે સમજી શકતા નથી, તેમજ આપણી પાછળ ગાદીના નિમિત્તથી વળગેલા રહેતા આધુનીક કુલ ગુરૂઓ નથી તે ક્રિયાનો ઉપદેશ કરતા જેથી મારા ઉમેદવાન બંધુઓને તે ક્રિયાઓથી વાકેફ કરવા હું ઉપરના નામથી ભગવાન શ્રી જિનસેનાચાર્યના કથનાનુસાર શ્રાવકોની સવારમાં કરવાની ક્રિયાઓને મારા વિચારોસહ રજુ કરૂં છું, તો વખતે મારામાં કંઇ દોષ રહી જાય તો તે વિદ્વાન વાંચકવર્ગ ક્ષમાની નજરે જોશે એમ આશા છે.

શ્રાવકે પ્રાતઃકાલમાં પથારીમાંથી ઉઠી શ્રીજિનેંદ્ર ભગવાનનું મનમાં ધ્યાન કરવું. આર્ત્ત રૌદ્ર, ધ્યાનોને છોડી દઇ સાત તત્વોનો વિચાર કરવો. ધર્મ અને શુકલ એ બે ધ્યાનોનું ધ્યાન કરવું અને પછી હમેશાં પોતાની ઇચ્છા વા અનિચ્છાથી થતાં પાપોનો નાશ કરવાવાળું સામાયક કરવું.

આ શ્લોકમાં, આ કાળમાં મહાવ્રત ધારણ કરવાં મહાન કઠીણ છે. આ જગમાં દીન એવો હું કયા ઉપાય વડે આ સંસારસમુદ્ર તરી શકીશ એવો મનમાં વિચાર કરી શૈયામાંથી ઉઠી શ્રાવકોને માટે શુદ્ધ એવું વસ્ત્ર ધારણ કરી પૂર્વ કે ઉત્તર દિશા તરફ મુખ કરીને મૌન ધારણ કરી સામાયક કરવું.

## સામાયક.

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभ भावना ।
आर्त्त रौद्र परित्याग स्तद्धि सामायिकं मतम् ॥

અર્થ–સર્વ પ્રાણીથી સમબુદ્ધિ ધારણ કરવી. સંયમમાં શુદ્ધ બુદ્ધિને લગાડવી. આર્ત્ત અને રૌદ્ર ધ્યાનનો ત્યાગ કરવો તેનું નામજ સામાયક.

આજે તો આપણે પલાંઠી વાળી સામાયકની ચોપડી હાથમાં લઇ સામાયક વાંચી જવું, યા મોઢે હોય તો અસ્ટમ પસ્ટમ લલકારી જવું. સવારમાં યા બપોરે આઠ વાગે કે દશવાગે સંધ્યાકાળે યા રાત્રે નવવાગે કે દશવાગે જ્યારે મન ચહાય ત્યારે સામાયક લલકારવું તેને સામાયક કર્યું એમ કહીએ છીએ. વળી કેટલાક તો વાતો કરતાં જાય ને મનમાં પાઠ પણ ચાલતો હોય એમ ડોળ કરે તેને પણ સામાયક કર્યું એમ સમજે છે. આપણે સામાયકને એવી રીતે બહુજ ઉતારી પાડયું છે. નહિ તો સામાયક એજ મનુષ્યમાત્રની મુક્તિનો રસ્તો છે. સર્વ ' ધર્મવાળા ' સામાયકનો સ્વિકાર કરે છે. કોઇ પ્રાણાયમ કહે છે, તો કોઇ યોગાભ્યાસ કહે છે. કોઇ ધ્યાન કહે છે, તો કોઇ આત્મવિચાર કહે છે, પણ એ સર્વેનો સામાયકમાંજ સમાવેશ થાય છે. વળી હાલમાં આખા ભરતખંડમાં ચાલી રહેલી રાષ્ટ્રીય પ્રવૃત્તિમાં પણ સામાયક એ સમાનતાની–ચ તરફ પણ બંધુભાવ બતાવવો, એમ ખાસ કહેલું છે. તેમજ ખુદ મહાત્મા ગાંધીજી સરખા પણ સામાયકનો સ્વિકાર કરી દરરોજ બે કલાક આત્મધ્યાનમાં વીતાડે છે. મનુષ્ય માત્રે ચોવીસ કલાકમાંથી પા અડધો કલાક ફાજલ કાઢી સામાયક હરનિશ કરવું જોઇએ.

આપણા શાસ્ત્રવાળા તો તેની મર્યાદા પણ બાંધી ગયા છે એટલે કે ઓછામાં ઓછી અડતાલીસ મીનીટમાં સામાયક સંપૂર્ણ થઇ શકે.

આપણે કલાકોના કલાકો ગપાટા હાંકવામાં ગુમાવીએ છીએ. મીનીટોની મીનીટો વાળ ઓળવા ચોળવા કે તેલ ઘાલવામાં ખર્ચી નાખીએ છીએ, તીલક કરતાં ખોઇ બેસીએ છીએ, તો ધર્મધ્યાનના સાધનભૂત મનુષ્ય માત્રની તરફ બંધુભાવ પ્રકટાવનારૂં સામાયક કરવા પા કલાક પણ નહિ રોકીએ ?

દિવસે ટાઇમ ન મળે તો સંધ્યાકાલે, સંધ્યા કાલે ન બને તો સવારમાં જરા વહેલા ઉઠી તે વખતે પણ સામાયક તો અવશ્ય થવું જોઇએ. અને સમભાવ એજ શ્રાવકનું ભૂષણ છે.

## વિધિ.

યોગ્ય કાળ, યોગ્ય આસન, યોગ્ય સ્થાન, યોગ્ય મુદ્રા અને યોગ્ય આવર્ત અને યોગ્ય સ્થિરતા ધારણ કરી વિનયપૂર્વક મુનિની માફક આવશ્યક ક્રિયા એટલે સામાયકનું સેવન કરવું.

જન્મ મરણ લાભ હાનિ સંયોગ વિયોગ બંધુ અને શત્રુ સુખ અને દુઃખ એ વિષયોમાં મારી સમબુદ્ધિ છે, એવી ભાવના સામાયક કરતી વેળા કરવી.

આ વિધિ માત્ર મુખ્ય છે. બીજી સરલ વિધિ દિગંબર જૈનપત્રના સંપાદક સાહેબે બહાર પાડેલા **સામાયકપાઠ** કે જેની અંદર આલોચના પાઠ અને લઘુ એટલે હીંદી સામાયક પાઠ આપેલા છે, તેમાં પ્રારંભે બતાવેલી છે, ત્યાંથી જોઇ લેવા સૂજ્ઞ વાંચકવૃંદને સુચના કરૂં છું. આ સ્થળે લખત પણ લખાણ વધી જાય ને સંપાદકજી વખતે લેખને સ્થાન ન આપે તો લેખ રખડયા કરે જેથી વિધિ લખી નથી, તો વિદ્વાનવર્ગ ક્ષમા કરશે ?

આજ સુધી મારા જોવામાં જાણવામાં સામાયકના પાઠ નીચે પ્રમાણે આવ્યા છે–

૧ અમિતગતિ આચાર્યકૃત સંસ્કૃત સામાયકપાઠ
૨ મહાચંદ્રજીકૃત હિંદી સામાયકપાઠ
૩ માણિકચંદ્રજીકૃત આલોચના પાઠ (હીંદી)
૪ મિચ્છામિ દુઃક્કડમ
૫ શ્રાવક પ્રતિક્રમણ સુત્ર ( પ્રકૃત )
૬ ત્રિવર્ણાચાર માંહેનું સંસ્કૃત સામાયકપાઠ

ઉપર પ્રમાણેના પાઠ પૈકી જેટલી કુરસદ હોય તેટલા પાઠ કરવા અગર એક પાઠ તો અવશ્ય કરવો. ગુજરાતી ભાષા જાણનારા માટે આ નીચે હું મહાચંદ્રજીકૃત સામાયક પાઠ ઉપરથી લખેલું ગુજરાતી સામાયક ઉતારૂં છું, તો આજ સુધી નહિ સમજવાથી યા નહિ ઉકલવાથી જેઓ સામાયક પાઠ કર્યા સિવાય રહેતા હોય તે એ ગુજરાતી પાઠને શીખી સામાયક કરવાની ટેવ પાડશે તો હું મને કૃતકૃત્ય સમજીશ.

મારા આ સામાયકનો સ્વિકાર થશે તો સંસ્કૃત પાઠ અને આલોચનાપાઠને ગુજરાતીમાં લખી આપની સેવામાં રજુ કરીશ.

* * *

## ગુજરાતી સામાયક પાઠ.

હરિગીત છંદ.

### ૧–પ્રતિક્રમણ કર્મ.

કાલ અનંત જગમાં ભ્રમણ કરીને,
દુઃખ બહુ મેં ભોગવ્યું,
ભવચક્રના ફેરા વિષે ધરી જન્મ પાપ બહુ કર્યું.
પૂર્વના પુજ ભવ વિષે સામાયક કદી નવ મળ્યું,
ધન્ય આજે ધન્ય છે જે, સુખરૂપ તે સાંપડયું. ૧
હે જિન હે સર્વજ્ઞ મેં જે પાપ તો બહુ આદર્યાં,
મન વચન ને વળી કાયની એકયતા વિણ તે કર્યાં.
આપની હજુરમાં હું દોષ કહેવા છું ખડો,
દોષ સર્વે સાંભળીને નાશ દુઃખોનો કરો. ૨
ક્રોધ માન મદ લોભ ને વળી મોહ માયા વશ થયો,
જીવ દુઃખી ભાળતાં સંચાર દયાનો નવ થયો.
વળી કામ વિણ એકેંદ્રિને બે ત્રણ ચઉ પંચેંદ્રીની,
હિંસા થકી જે દોષ લાગ્યો નાશો આપ પ્રતાપથી. ૩
સ્થાન ભ્રષ્ટ કરી વળી મેં દુઃખ જીવને આપીયું,
પુજ પગ નીચે પીલી દઇને પ્રાણ તેનું કાપીયું.
આ જગતના જે જીવ સર્વે તેહના ધણી આપ છો,
અરજ કરૂં હું આપને મમ દોષ સર્વે કાપજો. ૪
ઘનઘોર પાપોનો કરિતા ચોર અંજન જે હતો,

તેહનો અપરાધ સર્વે માફ માફ તમે કર્યો.
કરજો ક્ષમા હે નાથ! કરૂણાવંત મારા દોષને,
ષટ્કર્મ માંહે આ કર્યું મેં શુદ્ધ આ પ્રતિક્રમણને. ૫

## ૨–પ્રત્યાખ્યાન કર્મ.

પ્રમાદને વશ મેં થઇ જે જીવની હિંસા કરી,
તેહનો જે દોષ લાગ્યો પાપમાં વૃદ્ધિ થઇ.
મિથ્યા તજો તે દોષ સર્વે ઇશના પરસાદથી,
સુખ સઘળાં સાંપડે ને દુઃખ નાશે જેહથી. ૬
હું પાપી ને નિર્લજ્જ છું વળી શઠ દયાહીન છું,
પાપ કર્મો મેં કર્યા છે, પાપ બુદ્ધિવાળો હું.
નિંદુ સદા મુજ જીવને જે વાર વાર ગતિ ધરે,
સત્ય વિધ ધર્મે વરી તે પાપ કાર્યો આદરે. ૭
દુર્લભ છે નર જન્મ ને વળી કુળ શ્રાવકનું ખરૂં,
સંતજન સંયોગ ને વળી જિન શ્રદ્ધા સાંપડયું.
જિનેંદ્રના મુખકમળથી જે ઉપજી સરસ્વતી,
ધિક્ક મુજને ધિક્ક છે મેં આણ લોપી તેમની. ૮
ઇંદ્રીયનો લંપટ બની મેં જ્ઞાન-ધન ગુમાવીયું,
હિંસક વિધિ હૃદયે ધરીને અજ્ઞાની નામ કહાવીયું.
ગમનાગમન કરવા થકી જે જીવની હિંસા બને,
દોષ સર્વે નિંદુ છું પ્રભુ મન વચન કાયે ત્રણે. ૯
આલોચનથી દોષ લાગ્યા, મુજ શિર અથાગ જે,
આપ સમ જિનેંદ્રના પ્રસાદથી તે નાસશે.
મોહ મદ ને કુટીલતા જે વારવાર મેં ધારી છે,
દોષભાવ ધરી હૃદે ભયભીત થઇ નિંદુ હું તે. ૧૦

## ૩–સામાયક કર્મ

સમતા ધરૂં હું સર્વથી જે જીવ છે પૃથ્વી મહી
સમભાવ રાખું જીવ સર્વે જ્યોતિ સ્વરૂપે જ્ઞાનની,
આર્ત રૌદ્ર છોડીને સામાયકે ચિત્ત આદરૂં,
મુજ ભાવ શુદ્ધ બનાવી એક ચિત્તથી સંયમ ધરૂં. ૧૧
પૃથ્વી જલ ને અગ્નિ વાયુ, કાય ચાર વનસ્પતિ,
પંચ થાવરમાં વળી જ્યાં વાસ ત્રસ જીવનો અતિ.
ઇંદ્રિય બે ત્રણ ચાર ને પાંચે મળી જીવ થાય જે,
માફી ઇચ્છું સર્વની કરજો ક્ષમા આ જીવ તે. ૧૨
કંચન કથીર અરૂ ઘાસ સર્વે છે સમાન આ અવસરે
મહેલસમ મસાણ ને વળી શત્રુસમ મિત્રો બને.
જન્મમરણને સમ ગણીને મેંય સમતા આદરી,
કાળ સામાયક તણો જે ભાવ નવિન ત્યાં લગી. ૧૩

એક જીવ મારો ગણી મેં દેહ મમત રાખીઓ,
બીજા ગણી મેં ભિન્ન રૂડો ભાવ સમતા નવ ધર્યો.
માત તાત સુત બંધુ ને વળી મિત્ર નિજની નાર જે,
મુજ જીવથી તે ભિન્ન જાણી જાણ્યું આત્મ સ્વરૂપને.
કીચડરૂપી જગજાળમાં ફસાઇ રૂપ નવ જાણીયું
એકેંદ્રિયાદિ જીવને મેં પ્રાણ હણી દુઃખ આપીયું.
જીવો તણા સમુહ તે મુજ વિનતી દિલપર ધરો,
ભવ ભવ તણો અપરાધ મારો પ્રેમથી માફી કરો ૧૫

## ૪–સ્તવન કર્મ.

પ્રથમે નમી ઋષભેશને કરી ધ્યાન અજીતેશનું
ભવ દુઃખ હરણ સંભવ પ્રભુ થઇ શુદ્ધ અભિનંદન ભજું
સુમતિના દેનાર સુમતિનાથ ભવથી તારજો,
છઠ્ઠા પ્રભુ ઓ, પદ્મજીતજી ભીતિ ભવની ભાંગજો ૧૬
સુપાર્શ્વજીત ઓ સાતમા મુજ દેહ શુદ્ધ બનાવજો,
ચંદ્ર કાંતિસમ કાંતિધારક ચંદ્ર પ્રભુ સુખ આપજો.
ભવ દુઃખને નિવારીને પ્રભુ પુષ્પદંત દેખાડજો,
શીતલ જગતને શાંતિ કરીને ભય ભવનો ભાંગજો ૧૭
શ્રેય કર્તા શ્રેય ભર્તા શ્રેયરૂપ શ્રેયાંસ જે
સત ભદ્ર છે જેના પૂજક વસુ પૂજ્ય સુખ કર્તારતે
વિમલ વિમલ ગુણ દાખવે વળી અંતગત અનંત જે,
ધર્મ દાતા ધર્મ જીન છે શાંતિ શાંત કરનાર તે ૧૮
કુંથું મુક્તિ આપશે અર-નાથ ભવને કાપશે
મંત્ર મારણથી વિદારી મલ્લી મોહને મારશે.
વ્રત કરત સુવ્રત મુનિ નમિનાથને સુર સેવે છે,
ધર્મરથમાં સ્વાર થઇને જ્ઞાન નેમિ આપશે ૧૯
ધરણેંદ્રને પદ્માવતી ઇશ જે પ્રભુ પાર્શ્વ છે.
છેલ્લા પ્રભુ મહાવીર છે જે દુઃખ ભવનું કાપશે.
તેમને હું વારવાર સ્તુતિ કરી વંદન કરૂં,
ધો બુદ્ધિ એવી હે પ્રભુજી મોક્ષ સ્ત્રી જલ્દી વરૂં ૨૦

## ૫–વંદના કર્મ.

ધીર ને વળી વીર જેવા સન્મતિ વંદન કરૂં,
વર્ધમાન મહાવીર ને અતિવીર બોલી હું સ્મરૂં.
ત્રિશલા તનુજ ને ઇશ વિધાતા પ્રભુ વંદન કરૂં,
કનક સમ છે કાય જેની, પાપ છોડી નિત નમું. ૨૧
દુઃખ દોષને નિવારજો પ્રભુ સુત સિદ્ધારથ તણા,
દાવાનલ સમ દુર્મતિથી જ્વલિત જીવ ઉદ્ધારતા.
જનમ્યા પ્રભુ કુંડલપુરે જગ જીવને આનંદ થયો,

બોતેર વર્ષની આયુથી સૈા જીવતાં દુઃખો હર્યાં. ૨૨

સાત હાથની કાય છે પ્રભુ, ભય નથી જન્માંતનેા.
બ્રહ્મચર્ય જીવનમાં પ્રવેશી જ્ઞાનનેા આદેશ કર્યો,
ઉપદેશ દઇને હે પ્રભુ ભવ-દુઃખથી જીવ તારીયા
મોક્ષમાં પ્રભુ જઇ વરયા, મુજ હૃદયમાં બિરાજીયા. ૨૩

જેહના વંદન થકી દુર દુઃખ હેતે થાય છે,
જેહના વંદન થકી મુક્તિ સનમુખ ધાય છે.
જેહના વંદન થકી સુર સ્વર્ગના સેવા કરે,
વીરનાથને હું જોડી પાણી પ્રિત સહિત વંદન કરે. ૨૪

ષટ્કર્મ સામાયક મહી આ પાંચમું વંદન કર્યું,
સત ઈંદ્રિથી જે વંદ્ય છે તે વીરને વંદન કર્યું.
જન્મ ને વળી મર્ણનેા ભય દૂર કરી પ્રભુ શાંતિ દ્યો,
મુજ પાપના ભંડારને વળી દોષ સર્વે દૂર કરેા. ૨૫

## ૬–કાયોત્સર્ગ કર્મ.

કાયોત્સર્ગ કરૂં હવે જે સુખરૂપી ભાગ છે,
ભવચક્રનેા આંટા જે કાય દુઃખની ખાણુ છે.
પૂર્વ ને વળી દક્ષિણે નમી પશ્ચિમે ઉત્તર નમું,
ભવ પાપના નિવાર કારણુ જીવ ગૃહે વંદન કરૂં ૨૬

મુજ શિરને નીચું નમાવી હાથ જોડી હું નમું,
મન વચન કાયે મોહ છોડી આવર્ત્તાદિક હું કરૂં.
ત્રણુ લેાક મધ્યે જિન ભુવનમાં જિન જે અકૃત્રિમ છે
કૃત્રિમ બિંબ જે ઢાઇ દ્વીપમાં પ્રેમે વંદુ તેહને ૨૭

આઠ કોડ ને લાખ છપ્પન હજાર સત્યાણું જ છે,
ચારસેા એકાસી મંદિર જૈનનાં નિરધાર છે.
વ્યંતર અને જ્યોતિષ મહી જે બિંબ જૈની શેાભતાં
સર્વે ગૃહે વંદન કરૂં મમ પાપ જેથી ડોલતાં ૨૮

વૈરને નિવારનારૂં છેજ સામાયક ખરૂં
મૈત્રી ભાવ બતાવનારૂં એજ સામાયક ખરૂં
શ્રાવક અણુવ્રતી વળી જે સાત ગુણુ સ્થાની છે.
દુઃખને નિવારનારૂં સામાયક ઉપયોગી છે. ૨૯

શ્રમ લઇ ઉદ્યમ કરે નિજ આત્મ કાજે જે ભવિ
સૈા કામને નિવારીને સામાયક નિત મન ધરી
રાગ દોષ મદ લેાભ ને વળી માહે કેાધ ક્રેાધ જે દુશ્મનેા
મેાહન ધરે સમતા હ્રદે તેા નાશ પામે તેજનેા ૩૦

### દોહરેા.

ઓગણી સત છોતેરમાં, નામે ફાગણુ માસ.
સામાયક વર્ણન કર્યું, પ્રભુ ગુણુ ગાવા ખાસ.
મથુરદાસનેા સુત હું, નામે મેાહનલાલ.
કાણીસામાં ગેાઠવ્યેા, સુખદાયક આ પાઠ.

ઉપર પ્રમાણે સામાયક કરવાનું ન બની શકે તેા સિદ્ધમંત્રનેા જપ કરવેા.

સિદ્ધમંત્ર–

**ॐ नमः सिद्धेभ्यः**

**ॐ अनाहतपराक्रमाय परमब्रह्म सिद्धचक्राधिपतये नमः**

ઉપરના મંત્ર ન આવડે તેા નમેાકાર મંત્રનેા જપ કરવેા. તે પણુ ન બની શકે તેા ॐ असिआउसाय नमः એ મંત્રનેા જપ કરવેા.

એકંદરે ગૃહસ્થનું કર્તવ્ય છે કે તેણે પેાતાનાં છ કર્મો(દેવ પૂજા, ગુરૂ ઉપાસના, સ્વાધ્યાય, સંયમ, તપ ને દાન) હરનિશ કરવાં. પછી તેમાંથી પાત્રાદિની અગવડતાને લઇ એકાદ કર્મ ન બની શકે તેા હરકત નહિ પરંતુ **સ્વાધ્યાય, સામાયક, સંયમ**, વ્રત, તપ, દાન વિગેરે તેા હમેશ કરવું જ જોઇએ. સામાયક થઇ રહ્યા પછી કહેવું કે–

દેવેાની સંપતિનું આકર્ષણુ કરનારી, મુક્તિ શિવા વશ કરનારી, નરકાદિ ચાર ગતિમાં ઉપજતાં દુઃખેાનું ઉચ્ચારણુ કરનારી, આત્માનાં પાપેાનેા નાશ કરનારી, પ્રતિ દિવસ દુરાચારને સ્તંભન કરનારી, મેાહનેા સંમેાહન કરનારી એ અક્ષરાત્મક **પંચ નમસ્કાર રૂપા દેવતા** મારૂં રક્ષણુ કરેા !

ઉપર પ્રમાણે વિધિ થઇ ગયા પછી નીચે પ્રમાણે આત્મધ્યાન કરવું.

૧ આ મારેા આત્મા ક્યાંથી આવ્યેા ? આ કર્મનેા ભાર મેં ક્યાંથી એકત્ર કર્યો !

અનેક પ્રકારનાં દુઃખેાથી ભરેલા આ સંસારમાં આ જીવ પુણ્ય કર્મના ઉદયથી મનુષ્ય પર્યાયમાં જન્મ્યેા. આ પુરૂષ જન્મમાં આ જીવનેા મહિમા ઘણેા મેાટેા છે જેથી તેની પ્રાપ્તિ થવી અત્યંત દુર્લભ છે, એવા જિન ધર્મની પ્રાપ્તિને લઇ પાપનેા ક્ષય થાય છે.

આહાર, ભય, પરિગ્રહ, મૈથુન, આ ચાર ભેદથી પીડાતા આ જીવને આ ત્રિભુવનના કોઠામાં થોડું પણ સુખ હોતું નથી.

નરકમાં બહુજ દુઃખ છે. ત્યાં ઠંડી ઘણી છે. ગરમી ઘણી છે. ત્યાં ભૂખથી બહુજ ત્રાસ થાય છે, શરીરને તોડે છે, મારે છે, કરવતથી કાપે છે, ભાલા ભોંકે છે, ઘાણીમાં ઘાલી તેલ કાઢે છે, આંતરડાં કાઢે છે, મોટી ડાંગોથી માર પડે છે, પેટ અગ્નિ પર ધરાવે છે, લોખંડની પુતળીઓથી સ્પર્શ કરાવે છે, એવી રીતે પુષ્કળ દુઃખ પડે છે. જીવે પુષ્કળ પાપ કરેલાં જેથી અનેક દુઃખ ભોગવે છે, અને નરકમાં રુડે છે.

તિર્યંચ યોનિમાં પણ બહુજ દુઃખ હોય છે, ઉષ્ણતા ઠંડી વિગેરે નરકના જેવુંજ હોય છે. અરણ્યમાં સિંહાદિ પશુથી ભયભીત બનાય છે. વળી મનુષ્યો પીઠ પર ઘણો બોઝો લાદે છે, મારે છે. એકાદુ અવયવ કે આખું શરીર કાપે છે, ક્ષુધા તૃષાથી પીડાય છે, કીડી ડાંસાદિ કરડે છે. સ્વતંત્રતાનો નાશ થઇ બંધન યુક્ત થવાય છે, એવી રીતે ઘણાં દુઃખો ભોગવવાં પડે છે.

મનુષ્ય યોનિમાં પૂર્વ જન્મનાં પાપવડે જો ઇષ્ટ વસ્તુનો વિયોગ થાય છે, તો દુઃખ થાય છે, તે સિવાય મનમાં થનારી પીડા, શરીરને થનારી પીડા ( રોગ વિગેરે), જન્મથીજ લાગેલી ઉપાધિ અકસ્માતથી ઉપજેલી પીડા વિગેરે દુઃખો પ્રત્યેક મનુષ્યની પાછળ લાગેલાંજ હોય છે, તે સિવાય મનુષ્ય જો દરિદ્ર થાય છે, તો તેથી દુઃખી થાય છે, અપકીર્તિ થાય છે તો દુઃખી થાય છે, ઇજ્જત જતી રહે છે તો દુઃખી થાય છે, કોઇનો શોક થવાથી દુઃખ થાય છે, રૌદ્ર ધ્યાનથી દુઃખ થાય છે, કોઇ વ્યસનમા જકડાવાથી દુઃખી થાય છે, કોઇ ગુન્હાસર કેદખાનામાં જવું પડે તો દુઃખ થાય છે, એવી રીતે અનેક પ્રકારનું દુઃખ મનુષ્યોને થાય છે, એવું પ્રાતઃકાળમાં ચિંતવન કરવું.

દેવોનો વિચાર કરતાં તેમાં પણ દેવીના વિયોગથી દુઃખ થાય છે. પદચ્યુત થવાથી દુઃખ થાય છે, તેમજ મરણની ભયંકર ભીતિ રહે છે, તેથી દેવોને પણ દુઃખમય જીવનજ ગાળવું પડે છે.

આ જગત્ એક સારી રીતે તૈયાર કરેલી નાટકશાળા છે. જે સિદ્ધ પરમાત્મા તે પ્રેક્ષક છે, અને જુદી જુદી જાતના દેહ ધારણ કરનારો આ જીવ તે નૃત્ય કરનારો છે. ને તે નાટકાચાર્યનું કામ પણ કરે છે. જેવી રીતે લાલ, પીળો, લીલો, વિગેરે રંગ ધારણ કરી નટ નાચ કરે છે તેવી રીતે આ જીવ પણ જુદાં જુદાં સ્વરૂપ ધારણ કરી ઉંચ નીચ કુળમાં જન્મ લે છે.

આ મનુષ્ય કોઇ ઠેકાણે વહાલી પ્રિયાના આલિંગનના સુખનો અનુભવ કરે છે, તો કોઇ ઠેકાણે સુલલિત ગાયનોનું શ્રવણ કરી સુખ માને છે. કોઇ ઠેકાણે સુંદર નાચનો અનુભવ કરે છે, તો કોઇ ઠેકાણે ધર્મભ્રષ્ટ થઇ વિષયસેવનમાં દ્રઢ થાય છે, એ મોટું આશ્ચર્ય છે.

આ જીવ કોઇ ઠેકાણે કર્મ યોગથી સ્વરૂપવાન સ્ત્રીનું સ્વરૂપ ધારણ કરી અનેક પ્રકારનો હાવ ભાવ કરે છે, તો કોઇ વખત પંચ પ્રાણનો નાશ થવાથી નરકમાં દુઃખ ભોગવે છે. કોઇ ઠેકાણે દાસ દાસીથી છત્ર ચમરના સુખનો અનુભવ કરે છે. કોઇ ઠેકાણે મડદાના શરીરનો કીડો થાય છે. માટે આ જીવ દેહથી ભિન્ન છે. ને તે અજર અમર હોઇ એક દિન પરમાત્મા પણ થવાનો છે. આ દેહ, લક્ષ્મી, પુત્ર વિગેરે સર્વે ક્ષણભંગુર છે, માટે તેથી કંઇ સંબંધજ નથી. હે પ્રભુ! મારી બુદ્ધિ એવી રીતની બનાવો કે જેથી હું સંસારનાં બંધનોથી છુટી શકું! એવી રીતનું ચિંતવન કરવું. પછી ઉઠી જો ઘરમાંજ મંદિર હોય તો સર્વ પાપના નાશ કરનારા, પુણ્ય પ્રાપ્તિના સાધનભૂત દેવદાનવ જેની સેવા કરે છે એવા મંગલપ્રદ શ્રી જિનેંદ્રના બિંબનાં દર્શન કરી નીચેની સ્તુતિ કરવી.

**વસંતતિલકાવૃત્ત.**

सुप्तोत्थितेन सुमुखेन सुमंगलाय ।
द्रष्टव्यमस्ति यदि मंगलमेव वस्तु ॥

अन्येन किं तदिह नाथ तवैव वक्त्रं ।
त्रैलोक्यमंगलनिकेतनमीक्षणीयम् ॥

શાર્દુલવિક્રિડિત.

श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं ।
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमा क्रीडानिधानं महत ॥
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं ।
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयम् ॥

વસંતતિલકાવૃત.

धन्यः स एव पुरुषः समतायुतो यः ।
प्रातः प्रपश्यति जिनेंद्रमुखारविन्दम् ॥
पूजा सुदानतपसि स्पृहणीय चित्त ।
स्सेव्यः सदस्तु नृसुरैर्मुनि सोमसेनैः ॥

ઘરમાં મંદીર ન હોય તો ભગવાનના ફોટાનું પણ દર્શન કરવું. ત્યારબાદ તે દિવસે શું શું કામ કરવું તેનો વિચાર કરવો. કાળ, શરીર, દેશ, શત્રુ, મિત્ર, પરિવાર, પ્રાપ્તિ, ખર્ચ, દ્રવ્ય, જીવિકા, ધર્મ અને દાન તેનો વિચાર કરવો તેમજ તે દિવસે સવારથી બપોર સુધીમાં કરવાનું જે મુખ્ય કર્તવ્ય તેનો મનમાં વિચાર કરવો. પછી પૂર્વનાં વસ્ત્રો ધારણ કરતાં અને અંગરખું રૂમાલ વિગેરે ન લેતાં ફક્ત પહેરેલું ધોતીયું. અને ઓઢેલો દુપટ્ટો એ બે વસ્ત્ર અને પાણીનો લોટો લઇ નમઃ સિદ્ધેભ્યઃ એ મંત્રનો ઉચ્ચાર કરી નાકના જે છિદ્રમાંથી શ્વાસ બહાર આવતો હોય તે પગ પહેલો મુકી દિશા જવા ગમન કરવું.

ગામથી છેટે જઇ ગુપ્ત જગ્યાએ કે જ્યાં જીવ જંતુ હોય નહિ ત્યાં ભૂત, પ્રેત, પિશાચ, યક્ષ, દેવ, દેવી આદિનું સ્થાન છોડીને તેનાથી દૂર જઇ મળ ત્યાગ કરવો.

કદાચ તળાવમાંજ મૂત્ર વિસર્જન કરવાનો સમય આવે તો તળાવથી દશ હાથ જગ્યા છોડી બેસવું. અને મળ ત્યાગ કરવાનો સમય આવે તો સો હાથ જગ્યા છોડી બેસવું. આજ પ્રમાણે નદી પર તેનાથી ચાર ઘણા માપથી જગ્યા છોડવી.

ખેડેલી જમીન, પાણી ભરાવાની જગ્યા, પર્વતની ટોચ, દેવાલય, નદીતીર, દર્ભની જગ્યા, ફૂલની જગ્યા, ઘાસવાળી જગ્યા, વૃક્ષના મૂળ પાસે, પાણી, અગ્નિ અને સ્મશાન છોડી મળમૂત્રનો ત્યાગ કરવો એટલે કે ઉપરના કોઈ પણ સ્થળે તે ક્રિયા કરવા બેસવું નહિ. તેમજ પાણી ન હોય ત્યારે, ધોએલું વસ્ત્ર ન હોય ત્યારે, પુસ્તક કે શાસ્ત્ર અગર તેનાં વચન લખેલો કાગળ પાસે હોય ત્યારે મળમૂત્રનો ત્યાગ કરવો નહિ. તેવીજ રીતે સ્નાન કર્યા પછી કોગળા મારી અને ભોજન કરી તરતજ તે ક્રિયા કરવી નહિ.

અગ્નિ, સૂર્ય, ચંદ્ર, ગાય, દીવો, પાણી અને યોગીઓના સામું મુખ કરીને પણ મળમૂત્રનો ત્યાગ કરવો નહિ. તેમજ સંધ્યાકાળે પશ્ચિમ દિશા તરફ મુખ કરી તે ક્રિયા કરવી નહિ પરંતુ

अरण्येऽनुदके रात्रौ चोर व्याघ्राकुले पथि ।
सकृच्छ्रमूत्र पुरीषे द्रव्य हस्तो न दुष्यति ॥

મળમૂત્રનો વેગ બહુજ વધી ગયો હોય અને પાણી ન હોય તે વખતે કોઇ પણ ધાતુમય પદાર્થ હાથમાં લઇ તે ક્રિયા કરવાથી દોષ લાગતો નથી. પરંતુ તે સમયે એટલું યાદ રાખવું કે પાણી મળ્યે તરતજ સર્વ કપડાં પલાળી સ્નાન કરવું અને અપરાજીત મંત્રથી પ્રાયશ્ચિત્ત લેવું.

ગૃહસ્થ શ્રાવકે મળમૂત્રનો ત્યાગ કરતી વખતે જનોઇને જમણે કાને યા બંન્ને કાને અગર ગળે વીંટી દેવી.

મળનો ત્યાગ કરવા જે જગ્યાએ બેસવાનું છે, તે જગ્યા ઘાસથી સાફ કરવી. ત્યાર બાદ ઓઢેલું વસ્ત્ર મસ્તકે વીંટવું, તે ક્રિયા કરવા સુધી બોલવું નહિ. તેમજ શ્વાસોશ્વાસ કરવો નહિ તેમ થુંકવું પણ નહિ ને બન્ને પગ સરખા રાખવા. આ પ્રમાણે જે નથી કરતો તે સંયમ જાણતો નથી એમ સોમસેન આચાર્ય શ્રી ત્રિવર્ણાચારમાં જણાવે છે.

પ્રાતઃકાળમાં, મૈથુન વખતે, મૂત્ર અને શૌચ કરતાં, દાતણ કરતાં, સ્નાન કરતાં, ભોજન કરતાં, અને ઉલટી થાય ત્યારે પણ મૌન ધારણ કરવું એટલે કે બોલવું નહિ. ( અપૂર્ણ )

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला,–सूरतमें मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी–सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।